CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2019 with Solution PDF-Set 2/1/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 6, 7, 8, 9, 11, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता
ज़रूर दिखाई देती होंगी नसीहतें
नुकीले पत्थरों-सी
दुनिया भर के करोड़ों पिताओं की लंबी कतार में
पता नहीं कौन-सा नंबर है मेरा
पर बच्चों के फूलों वाले बग़ीचे की दुनिया में
तुम अव्वल हो पहली क़तार में मेरे लिए
मुझे माफ़ करना मैं अपनी मूर्खता और प्रेम में समझता था
मेरी छाया के तले ही सुरक्षित रंग-बिरंगी दुनिया होगी तुम्हारी
अब जब तुम सचमुच की दुनिया में निकल गई हो
मैं ख़ुश हूँ सोचकर
कि मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई ।

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [4 अंक]

1(क). टिप्पणी कीजिए : "प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पिता के प्रेम और उसकी बाहरी अभिव्यक्ति का अंतर समझना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: प्रेम की अभिव्यक्ति पहचानें पिता अपने बच्चों से गहरा प्रेम करता है, किंतु वह प्रेम हमेशा दुलार या मधुर शब्दों में व्यक्त नहीं होता। बच्चों की सुरक्षा के लिए दी गई सलाह में भी उसका स्नेह छिपा रहता है।

चरण 2: नसीहतों से संबंध जोड़ें बच्चों को पिता की कठोर नसीहतें अधिक दिखाई देती हैं। उनकी कठोरता के पीछे छिपी चिंता सहज दिखाई नहीं देती; इसलिए कविता पिता के अदृश्य प्रेम और दिखाई देने वाली सलाह में अंतर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता का प्रेम प्रायः मौन होता है; वह बच्चों की सुरक्षा की चिंता और कठोर नसीहतों में छिपा रहता है, इसलिए सीधे दिखाई नहीं देता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल कठोरता न लिखें; उसके पीछे छिपे स्नेह और सुरक्षा की चिंता को भी स्पष्ट करें।

1(ख). पिता किस बात के लिए क्षमा माँग रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पिता अपनी पुरानी धारणा को पहचानकर संतान की स्वतंत्रता स्वीकार करता है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: पुरानी धारणा पहचानें पिता समझता था कि केवल उसकी छाया के नीचे ही बच्चों की रंग-बिरंगी दुनिया सुरक्षित रह सकती है। अपनी इस धारणा को वह अब प्रेम से उपजी मूर्खता कहता है।

चरण 2: क्षमा का कारण समझें संतान के वास्तविक दुनिया में निकलने पर पिता समझता है कि उसका अनुभव ही अंतिम सीमा नहीं है। संतान की अपनी स्वतंत्र दुनिया और पहचान है, जिसे वह अब प्रसन्नता से स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता इस भूल के लिए क्षमा माँग रहा है कि वह अपनी छाया और संरक्षण में ही संतान की दुनिया को सुरक्षित समझता था तथा उसकी स्वतंत्र क्षमता को नहीं पहचान पाया था।

त्वरित सुझाव: क्षमा का कारण बताते समय पिता की सुरक्षा संबंधी धारणा लिखें और संतान की स्वतंत्रता से उसका संबंध जोड़ें।

1(ग). 'नसीहत' किसे कहते हैं ? उन्हें पत्थरों-सी क्यों कहा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ के साथ कविता में प्रयुक्त उपमा का भाव स्पष्ट करना अपेक्षित है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: नसीहत का अर्थ लिखें नसीहत का अर्थ है भले के लिए दी जाने वाली सीख, सलाह या उपदेश। पिता की नसीहत का उद्देश्य संतान को गलतियों और कठिनाइयों से बचाना है।

चरण 2: पत्थरों से तुलना समझें बच्चों को पिता की सीख कभी कठोर और चुभने वाली लगती है। इसी अनुभूति को नुकीले पत्थरों की उपमा से व्यक्त किया गया है। यहाँ वास्तविक पत्थरों की बात नहीं, सलाह की महसूस होने वाली कठोरता की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष नसीहत हित के लिए दी गई सीख या सलाह है। पिता की नसीहतें बच्चों को कठोर तथा चुभने वाली लगती हैं, इसलिए उन्हें नुकीले पत्थरों-सी कहा गया है।

त्वरित सुझाव: पहले नसीहत का अर्थ दें, फिर नुकीले पत्थरों और चुभने वाली सलाह का समान गुण स्पष्ट करें।

1(घ). आशय समझाइए : "मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई ।" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा के अहाते का लाक्षणिक अर्थ पिता के अनुभव, विचार और परिचित संसार की सीमा है।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ पहचानें अहाता सीमित परिसर का संकेत है। पिता की भाषा का अहाता उसके अनुभवों, विचारों और समझ की सीमा को व्यक्त करता है। संतान की परछाई उस सीमा से आगे पहुँच चुकी है।

चरण 2: पिता की प्रसन्नता स्पष्ट करें संतान अब वास्तविक संसार में अपनी राह बना रही है। पिता प्रसन्न है कि उसका जीवन और व्यक्तित्व केवल पिता की दृष्टि तक सीमित नहीं रहा; वह स्वतंत्र अनुभवों और पहचान के साथ आगे बढ़ रही है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि संतान पिता के विचारों और अनुभवों की सीमाओं से आगे बढ़कर स्वतंत्र संसार में अपनी अलग पहचान बना चुकी है; पिता इससे प्रसन्न है।

त्वरित सुझाव: भाषा के अहाते को वास्तविक मकान न समझें; उसे पिता के अनुभवों की सीमा और संतान की स्वतंत्र पहचान से जोड़ें।

अथवा

1. जहाँ विपुल विश्व की माया,
विनाशशील नर्तन में
क्षण-क्षण बदल रही है अपनी काया
पल-पल जी रही है नवीना बनकर
वायु के चरण भी काँप रहे हैं,
विस्तृत मरु की नीरवता-सी,
लहरियाँ लोट रही हैं धरा पर
घायल विक्षुब्ध सर्पिणियों-सी, ऐसे में
तुम्हारे लिए ऐसी जगह मैं कहाँ से लाऊँ
जहाँ तुम खेल सको निर्भय, हर्षित होकर ।
निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [4 अंक]

1(क). कविता में संसार को कैसा बताया गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संसार की प्रकृति को उसके परिवर्तन और अस्थिरता के आधार पर समझना है।
- उत्तर का आधार 'विनाशशील नर्तन' तथा 'क्षण-क्षण बदल रही है अपनी काया' जैसे पद हैं।

चरण 1: संसार के स्वरूप को पहचानें कवि विश्व की माया को विनाशशील नर्तन में लीन बताता है। इससे स्पष्ट है कि संसार का कोई रूप स्थायी नहीं है; जो रूप अभी दिखाई देता है, वह अगले क्षण बदल सकता है।

चरण 2: चित्रों का अर्थ जोड़ें काँपती वायु और घायल सर्पिणियों जैसी लहरियों के चित्र संसार की व्याकुलता और असुरक्षा को उभारते हैं। इसलिए यहाँ केवल सुंदर प्रकृति का वर्णन नहीं, बल्कि निरंतर बदलते और भयपूर्ण परिवेश का चित्रण है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता में संसार को नश्वर, निरंतर परिवर्तनशील, अशांत और भययुक्त बताया गया है।

त्वरित सुझाव: संसार का स्वरूप लिखते समय 'क्षण-क्षण बदल रही है अपनी काया' को परिवर्तनशीलता का आधार बनाएँ।

1(ख). क्षण-प्रतिक्षण किसे नवीनता प्राप्त हो रही है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में क्रिया और उसके कर्ता का संबंध पहचानना इस प्रश्न का आधार है।
- 'अपनी काया' बदलने और 'नवीना बनकर' जीने का संबंध विश्व की माया से है।

चरण 1: संबंधित पंक्तियाँ पहचानें कवि पहले विपुल विश्व की माया का उल्लेख करता है और फिर उसके क्षण-क्षण अपनी काया बदलने की बात कहता है। दोनों कथन एक ही संसार के बदलते रूप की ओर संकेत करते हैं।

चरण 2: नवीनता का आशय समझें पल-पल नवीना बनकर जीने का अर्थ है कि संसार अपने पुराने रूप में स्थिर नहीं रहता। उसके रूप लगातार बदलते हैं और प्रत्येक नए क्षण में वह नया रूप धारण करता है। उत्तर इसी विश्व या विश्व की माया के बारे में है।

चरण 3: निष्कर्ष क्षण-प्रतिक्षण विश्व की माया अर्थात संसार को नवीनता प्राप्त हो रही है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का कर्ता खोजने के लिए 'नवीना बनकर' से पहले आई 'विश्व की माया' वाली पंक्ति देखें।

1(ग). 'वायु के चरण भी काँप रहे हैं' से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि वायु को मानवीय चरण देकर भय और अस्थिरता का वातावरण रचता है।
- पंक्ति का आशय उसके आसपास के व्याकुल प्राकृतिक चित्रों के साथ समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यात्मक कथन समझें वायु के वास्तविक चरण नहीं होते। कवि उसे मनुष्य के समान काँपता हुआ चित्रित करके वातावरण की असुरक्षा और भय को प्रभावपूर्ण बनाता है। अतः पंक्ति को केवल हवा की सामान्य गति के अर्थ में नहीं लेना चाहिए।

चरण 2: प्रसंग से भाव स्पष्ट करें इससे आगे लहरियों को घायल और विक्षुब्ध सर्पिणियों जैसा कहा गया है। इन चित्रों के बीच वायु का काँपना बताता है कि समूचा परिवेश आतंकित और अस्थिर है। ऐसे वातावरण में निर्भय होकर खेल सकने का स्थान खोजना कठिन है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि वातावरण इतना भयपूर्ण और अस्थिर है कि वायु भी मानो डर से काँप रही है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण वाली पंक्ति का अर्थ लिखते समय चित्र के साथ उससे उत्पन्न भय या व्याकुलता का भाव भी बताएँ।

1(घ). कवि कैसा स्थान खोज रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर कवि की अंतिम इच्छा और खोज के आधार पर देना है।
- 'निर्भय, हर्षित होकर' शब्द वांछित स्थान के आवश्यक गुण स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: कवि की इच्छा पहचानें कवि ऐसे स्थान की तलाश करता है जहाँ संबोधित व्यक्ति बिना डर के खेल सके। उसके लिए केवल खेलने की जगह पर्याप्त नहीं है; उस स्थान में सुरक्षा और आनंद का वातावरण भी होना चाहिए।

चरण 2: परिवेश से आवश्यकता जोड़ें काव्यांश का संसार लगातार बदलता, भयपूर्ण और व्याकुल है। इसीलिए कवि उस अशांति से मुक्त सुरक्षित स्थान चाहता है। अंतिम पंक्ति में निर्भयता और हर्ष का उल्लेख उसकी खोज का लक्ष्य सीधे स्पष्ट कर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ऐसा सुरक्षित, शांत और आनंदमय स्थान खोज रहा है जहाँ संबोधित व्यक्ति निर्भय और प्रसन्न होकर खेल सके।

त्वरित सुझाव: स्थान के गुण अंतिम पंक्ति से चुनें; उत्तर में निर्भयता और प्रसन्नता दोनों को अवश्य शामिल करें।

2. अगर कोई ज़िंदगी में सच न बोलने, सच स्वीकार न करने और सच का साथ न देने की कोई विवशता बताकर अपने हर कार्य, विचार और मकसद को सही साबित करने के लिए छल-छद्म और झूठ का सहारा ले और फिर भी सीना तानकर ख़ुद को सच्चाई का रहनुमा साबित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो, तो इससे किसका भला होगा ? वह यही करते रहे । फिर ढलती उम्र में अचानक एक दिन उनको अपनी ज़िंदगी में पीछे मुड़कर झाँकने का विचार आया । जब जागो, तभी सबेरा । अब ये वाकई ईमानदार और समाज के रहनुमा बनकर समाजसेवा कर सकते हैं । जीवन का सबसे बड़ा सच अपने कार्य और कर्तव्य को ईमानदारी से समझना और समाज की बेहतरी के लिए सोचना है । वे सोचने लगे, ढलती उम्र में अब क्यों उनको ज़िंदगी के इस कटु सच को स्वीकार करने के प्रति उत्सुकता बढ़ रही है ?

कुछ दार्शनिकों का कहना है कि आत्म-शक्ति से कमज़ोर, परम्परावादी और निहित स्वार्थ को महत्त्व देना मानवीय सरोकारों से ख़ुद को दूर करने जैसा है । आमतौर पर ज़िंदगी के सच से रूबरू होने और उसे स्वीकार करने का साहस हर किसी के पास नहीं होता । यह चेतना का उदारवादी लक्षण और भाव है, जो कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखता है । अपने प्रति संवेदनहीन बने रहना मानव जीवन का सबसे बड़ा सच है । समाज को अपनी औकात दिखाने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने में न जाने कितने छल-छद्मों का सहारा हम लेते हैं । यह ज़िंदगी का सबसे बड़ा यथार्थ है, जो हम स्वयं से और समाज से छिपाने के लिए कृत्रिमता का सहारा लेते रहते हैं ।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [12 अंक]

2(क). 'सीना तानना' मुहावरे का क्या अर्थ है ? अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके प्रचलित भाव से तय होता है और वाक्य में वही भाव स्पष्ट होना चाहिए।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: मुहावरे का अर्थ पहचानें सीना तानना का अर्थ है गर्व या अकड़ के साथ खड़ा होना अथवा व्यवहार करना। गद्यांश में झूठ का सहारा लेने वाला व्यक्ति भी गर्व से अपने को सच्चाई का रहनुमा बताता है।

चरण 2: स्वतंत्र वाक्य बनाएँ वाक्य-प्रयोग: प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद खिलाड़ी सीना तानकर मंच पर पहुँचा। इस वाक्य में उपलब्धि से उत्पन्न गर्व स्पष्ट होता है और मुहावरा स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ: गर्व या अकड़ दिखाना। वाक्य: देश की रक्षा करने वाले वीर सैनिक सीना तानकर चलते हैं।

त्वरित सुझाव: मुहावरे को वाक्य में ज्यों का त्यों उपयुक्त रूप में रखें और प्रसंग से गर्व का भाव स्पष्ट होने दें।

2(ख). 'ढलती उम्र' से क्या तात्पर्य है ? इसका विपरीतार्थक क्या होगा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढलना और चढ़ना जीवन की अवस्थाओं के लिए प्रयुक्त लाक्षणिक शब्द हैं।
- उत्तर का आधार प्रश्न में दिए गए शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ और उनके बीच का संबंध है।

चरण 1: ढलती उम्र का अर्थ समझें ढलती उम्र से तात्पर्य जीवन की उत्तरावस्था या वृद्धावस्था की ओर बढ़ती आयु से है। गद्यांश में व्यक्ति अपने बीते जीवन को देखकर अपने व्यवहार और कर्तव्य पर पुनर्विचार करता है।

चरण 2: विपरीतार्थक चुनें ढलती के विपरीत चढ़ती शब्द आता है। इसलिए ढलती उम्र का विपरीतार्थक चढ़ती उम्र है, जो बढ़ती हुई युवा अवस्था का बोध कराता है। उत्तर में पूरे पद का विलोम लिखना अर्थ को स्पष्ट रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष ढलती उम्र का अर्थ है वृद्धावस्था की ओर बढ़ती आयु। इसका विपरीतार्थक चढ़ती उम्र है, अर्थात युवावस्था की ओर बढ़ती आयु।

त्वरित सुझाव: केवल ढलती का विलोम लिखने के बजाय पूरा पद चढ़ती उम्र लिखें, जिससे जीवन की अवस्था का अर्थ स्पष्ट रहे।

2(ग). कोई व्यक्ति प्राय: विवशता किस उद्देश्य से बताता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में व्यक्ति के बताए कारण को उसके वास्तविक उद्देश्य से जोड़कर समझना आवश्यक है।
- प्रश्न का केंद्र विवशता का प्रकार नहीं, उसके पीछे छिपा स्वार्थ है।

चरण 1: प्रसंग पहचानना गद्यांश के आरंभ में ऐसा व्यक्ति वर्णित है जो सच बोलने, सच स्वीकार करने और सच का साथ देने से बचता है। वह अपने इस आचरण के लिए विवशता का बहाना प्रस्तुत करता है। इस बहाने को वास्तविक ईमानदारी नहीं माना गया है। वह अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करने से बच रहा है।

चरण 2: उद्देश्य स्पष्ट करना वह अपने प्रत्येक कार्य, विचार और मकसद को सही साबित करना चाहता है। इसी उद्देश्य से वह छल-छद्म तथा झूठ का सहारा लेता है और स्वयं को सच्चाई का रहनुमा दिखाने का प्रयास करता है। अत: विवशता की आड़ उसके अनुचित आचरण को उचित ठहराने के लिए ली जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति प्राय: अपने हर कार्य, विचार और उद्देश्य को सही साबित करने तथा सच से बचने वाले आचरण को उचित ठहराने के लिए विवशता बताता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विवशता का बहाना और अपने कार्यों को सही सिद्ध करने का उद्देश्य दोनों लिखिए।

2(घ). किस प्रवृत्ति और आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वास्तविक सत्यनिष्ठा और सत्यनिष्ठ दिखने के ढोंग का अंतर समझना है।
- लेखक के प्रश्न का उत्तर उसके द्वारा बताए गए छलपूर्ण व्यवहार से मिलता है।

चरण 1: हानिकारक प्रवृत्ति पहचानना गद्यांश में व्यक्ति सच न बोलने, सच स्वीकार न करने और सच का साथ न देने की विवशता बताता है। वह अपने स्वार्थ और अनुचित कार्यों को सही सिद्ध करने के लिए झूठ तथा छल-छद्म अपनाता है। यह सत्य के प्रति ईमानदार आचरण नहीं है।

चरण 2: ढोंग का परिणाम बताना ऐसा व्यक्ति इस कपट के बावजूद सीना तानकर स्वयं को सच्चाई का रहनुमा सिद्ध करना चाहता है। लेखक इसी विरोधाभास पर प्रश्न उठाता है कि इससे किसका भला होगा। अपने वास्तविक आचरण को सुधारे बिना केवल सत्य का पक्षधर बनने का दिखावा किसी का हित नहीं कर सकता। समाजहित के लिए सच्चा आचरण आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष झूठ और छल-छद्म से अपने कार्यों को सही ठहराने तथा फिर स्वयं को सच्चाई का रहनुमा बताने की प्रवृत्ति और आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता।

त्वरित सुझाव: झूठ बोलने के साथ सत्य का रहनुमा बनने का ढोंग भी अवश्य लिखिए।

2(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'जब जागो, तभी सबेरा' । इस कहावत का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहावत का सामान्य अर्थ और गद्यांश में उसका विशेष संदर्भ अलग-अलग स्पष्ट करना है।
- प्रसंग का आधार ढलती उम्र में व्यक्ति का आत्मचिंतन और सुधार की संभावना है।

चरण 1: कहावत का आशय 'जब जागो, तभी सबेरा' का आशय है कि जब भी व्यक्ति को अपनी भूलों का ज्ञान हो और वह सही मार्ग अपनाने का निश्चय करे, उसी समय से जीवन में सुधार की शुरुआत हो सकती है। सुधार का अवसर देर से मिलने पर भी उसे व्यर्थ नहीं समझना चाहिए।

चरण 2: गद्यांश से संदर्भ जोड़ना गद्यांश में एक व्यक्ति जीवन भर छल और झूठ का सहारा लेने के बाद ढलती उम्र में पीछे मुड़कर अपने जीवन को देखता है। लेखक कहता है कि वह अब भी सच्चे अर्थों में ईमानदार बनकर समाजसेवा कर सकता है। इसी देर से जागे आत्मबोध और नए सदाचरण की संभावना के संदर्भ में यह कहावत प्रयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष कहावत का अर्थ है कि भूल समझ में आते ही सुधार आरंभ किया जा सकता है। यहाँ इसका प्रयोग ढलती उम्र में आत्मचिंतन करने वाले व्यक्ति के ईमानदार बनकर समाजसेवा करने की संभावना के संदर्भ में हुआ है।

त्वरित सुझाव: आशय के बाद ढलती उम्र, आत्मचिंतन और समाजसेवा का संदर्भ जोड़िए।

2(च). चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के दूसरे अनुच्छेद में दिए गए कथन पर आधारित है।
- लक्षण की पहचान करते समय सत्य से सामना करने और उसे स्वीकार करने, दोनों को ध्यान में रखना है।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानना लेखक बताता है कि जिंदगी के सच से रूबरू होने तथा उसे स्वीकार करने का साहस हर किसी के पास नहीं होता। व्यक्ति प्रायः अपने स्वार्थ, परंपरागत सोच और कृत्रिम छवि के पीछे छिपता रहता है। इसलिए सच का सामना करना सहज या सामान्य व्यवहार नहीं माना गया है।

चरण 2: लक्षण और दुर्लभता स्पष्ट करना अपने जीवन की वास्तविकता को पहचानकर उसे ईमानदारी से स्वीकार करने का साहस ही चेतना का उदारवादी लक्षण है। लेखक इसे ऐसा भाव कहता है जो कहीं-कहीं और कभी-कभी दिखाई देता है। इसी सीमित उपस्थिति के कारण प्रश्न में उसे दुर्लभ कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष जिंदगी के सच से रूबरू होने और उसे स्वीकार करने का साहस चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण है। यह साहस सभी में नहीं होता और कभी-कभी ही दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: केवल सच जानना न लिखें; उसका सामना करने और स्वीकार करने का साहस भी लिखें।

2(छ). जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में यथार्थ का संबंध मनुष्य के मुखौटे और छलपूर्ण सामाजिक प्रदर्शन से है।
- प्रश्न के दोनों पक्षों, किसे और क्यों, का उत्तर उसी अंतिम प्रसंग से देना है।

चरण 1: यथार्थ की पहचान गद्यांश के अंत में बताया गया है कि मनुष्य समाज के सामने अपनी हैसियत दिखाने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने लगता है। वह अपनी बनाई हुई छवि को सच साबित करने के लिए अनेक छल-छद्मों का सहारा लेता है। लेखक इसी व्यवहार को जिंदगी का बड़ा यथार्थ कहता है।

चरण 2: कारण का स्पष्टीकरण मनुष्य अपनी वास्तविकता को स्वयं से और समाज से छिपाना चाहता है। इसलिए वह कृत्रिमता का सहारा लेकर दिखावटी रूप को बनाए रखता है। कथन का आशय यह है कि बाहरी प्रदर्शन के पीछे छिपा वास्तविक स्वरूप और उसे छिपाने

का यह निरंतर प्रयास ही जीवन की कटु वास्तविकता बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाज में अपनी हैसियत दिखाने के लिए मुखौटे को वास्तविक बनाने और उसके लिए छल-छद्म अपनाने को जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ कहा गया है, क्योंकि मनुष्य अपनी सच्चाई स्वयं से तथा समाज से छिपाने के लिए कृत्रिमता का सहारा लेता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को अंतिम अनुच्छेद से जोड़कर मुखौटा, छल-छद्म और वास्तविकता छिपाने का कारण लिखिए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

भारतीय खेल कबड्डी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक ही विषय के विभिन्न पक्षों को विचारों के स्वाभाविक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। आरंभ विषय का परिचय देता है, मध्य उसका विस्तार करता है और अंत उसका महत्त्व स्पष्ट करता है।
- कबड्डी पर लिखते समय खेल की भारतीय परंपरा, खेलने की मूल विधि, आवश्यक गुण और वर्तमान लोकप्रियता को परस्पर जोड़ना चाहिए। भाषा सरल तथा विषय के अनुरूप होनी चाहिए।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाइए आरंभ में कबड्डी को भारत का लोकप्रिय परंपरागत खेल बताइए। फिर कम साधनों में खेले जाने की विशेषता, दो दलों के बीच मुकाबले और आक्रमणकर्ता की भूमिका का उल्लेख कीजिए। इसके बाद शारीरिक क्षमता, सजगता, साहस और सामूहिक सहयोग के विकास की बात रखिए। अंत में इस खेल को प्रोत्साहित करने का संदेश दीजिए। अनुच्छेद को खेल के नियमों की लंबी सूची बनाने के बजाय उसके स्वरूप और उपयोगिता पर केंद्रित रखिए।

चरण 2: पूरा आदर्श अनुच्छेद लिखिए **भारतीय खेल कबड्डी**

कबड्डी भारत का एक लोकप्रिय परंपरागत खेल है। गाँवों के खुले मैदानों से लेकर बड़े खेल परिसरों तक इसकी विशेष पहचान है। इसे खेलने के लिए महँगे उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती; समतल मैदान और उत्साही खिलाड़ी पर्याप्त हैं। इसमें दो दल एक-दूसरे का सामना करते हैं। आक्रमण करने वाला खिलाड़ी विरोधी क्षेत्र में जाकर खिलाड़ियों को छूने और सुरक्षित लौटने का प्रयास करता है, जबकि प्रतिद्वंद्वी उसे रोकते हैं। इस खेल में केवल बल नहीं, बल्कि चपलता, धैर्य, सूझबूझ और सही समय पर निर्णय लेने की क्षमता भी आवश्यक है। कबड्डी शरीर को स्वस्थ रखती है तथा खिलाड़ियों में अनुशासन, साहस और परस्पर सहयोग की भावना विकसित करती है। विद्यालयी प्रतियोगिताओं और बड़े आयोजनों ने इसकी लोकप्रियता बढ़ाई है। इसके विकास के लिए अच्छे मैदान, प्रशिक्षण और खिलाड़ियों को उचित प्रोत्साहन मिलना चाहिए। हमें अपने इस भारतीय खेल को अपनाकर इसकी गौरवपूर्ण परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष इस अनुच्छेद में कबड्डी का परिचय, खेल का सामान्य स्वरूप, उससे विकसित होने वाले गुण तथा उसे प्रोत्साहित करने का संदेश एक ही केंद्रीय विषय से जुड़े हुए हैं।

त्वरित सुझाव: कबड्डी पर अनुच्छेद लिखते समय परिचय, खेलने का स्वरूप, लाभ और प्रोत्साहन के क्रम में विचार रखिए; अनावश्यक तकनीकी विवरण से बचिए।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

मेरा देश महान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देश के प्रति गौरव व्यक्त करने वाले अनुच्छेद में भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ ठोस आधार भी होने चाहिए। सांस्कृतिक विविधता, स्वतंत्रता के मूल्य और नागरिकों का योगदान विषय को सार्थक बनाते हैं।
- अनुच्छेद की सभी बातें उसके शीर्षक से जुड़ी हों। देश की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए जिम्मेदार नागरिक के कर्तव्यों की चर्चा करने से विचार संतुलित और प्रभावशाली बनता है।

चरण 1: विचारों को क्रमबद्ध कीजिए भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता से अनुच्छेद आरंभ कीजिए। फिर अनेक भाषाओं, धर्मों और परंपराओं के बीच राष्ट्रीय एकता का विचार रखिए। स्वतंत्रता-संग्राम तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का संक्षिप्त उल्लेख करने के बाद किसानों, सैनिकों, श्रमिकों और वैज्ञानिकों के योगदान को जोड़िए। अंत में देश की महानता को बनाए रखने के लिए ईमानदारी, समानता, स्वच्छता और सद्भाव जैसे नागरिक कर्तव्यों पर बल दीजिए। तथ्यों के स्थान पर केवल नारों की पुनरावृत्ति न कीजिए।

चरण 2: पूरा आदर्श अनुच्छेद लिखिए **मेरा देश महान**

भारत मेरा देश है और मुझे इसकी समृद्ध विरासत पर गर्व है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ, उपजाऊ मैदान, विस्तृत समुद्रतट और विविध वनस्पतियाँ इसके प्राकृतिक सौंदर्य को विशिष्ट बनाती हैं। यहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ और परंपराएँ हैं, फिर भी हम सब एक राष्ट्र के नागरिक हैं। विविधता में एकता हमारी बड़ी शक्ति है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग ने हमें स्वतंत्र जीवन दिया और संविधान ने समानता, न्याय तथा स्वतंत्रता के आदर्श प्रदान किए। किसान अन्न उगाते हैं, सैनिक सीमाओं की रक्षा करते हैं, श्रमिक निर्माण करते हैं और वैज्ञानिक नए अनुसंधानों से देश को आगे बढ़ाते हैं। कला, साहित्य और ज्ञान की हमारी परंपरा भी मानवता को समृद्ध करती है। देश की महानता केवल अतीत की उपलब्धियों में नहीं, नागरिकों के अच्छे आचरण में भी दिखाई देती है। इसलिए हमें भेदभाव दूर करना, पर्यावरण बचाना, ईमानदारी से काम करना और परस्पर सद्भाव बढ़ाना चाहिए। अपने कर्तव्यों का पालन करके ही हम भारत को और महान बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अनुच्छेद देश की प्रकृति, सांस्कृतिक एकता, स्वतंत्रता के मूल्यों और नागरिकों के योगदान को जोड़ता है तथा देशप्रेम को जिम्मेदार आचरण से सार्थक बनाता है।

त्वरित सुझाव: देशप्रेम के विषय में दोहराए हुए नारों के बजाय विविधता, एकता और नागरिक कर्तव्यों के ठोस उदाहरण देकर अनुच्छेद प्रभावशाली बनाइए।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

सन्त कवि तुलसीदास [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तित्वपरक अनुच्छेद में व्यक्ति का परिचय, प्रमुख योगदान और उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं को एक केंद्रीय विचार से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है।
- तुलसीदास पर लिखते समय रामभक्ति, लोकभाषा में साहित्य-सृजन और लोकमंगल की भावना मुख्य आधार हैं। तथ्यपरकता बनाए रखते हुए भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।

चरण 1: अनुच्छेद का स्वरूप निश्चित करें शीर्षक के बाद विषय को एक ही अनुच्छेद में विकसित करें। आरंभ में तुलसीदास का संक्षिप्त परिचय दें, मध्य में उनकी रचनाओं और विचारों का उल्लेख करें तथा अंत में उनके साहित्य के महत्त्व को स्पष्ट करें। अनुच्छेद को पत्र या भाषण का रूप न दें।

चरण 2: विषय के लिए सामग्री चुनें तुलसीदास भक्तिकाल के रामभक्ति काव्य के प्रमुख कवि हैं। रामचरितमानस उनकी प्रसिद्ध रचना

है, जिसकी भाषा अवधी है। विनयपत्रिका और कवितावली भी उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। राम के मर्यादित चरित्र, परहित, करुणा और कर्तव्य को उनके साहित्य के केंद्रीय मूल्यों के रूप में लिया जा सकता है। जन्मतिथि जैसे विवादित विवरण देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **सन्त कवि तुलसीदास**

सन्त कवि गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की रामभक्ति धारा के महान कवि हैं। उन्होंने अपनी काव्यप्रतिभा से भक्ति को जनजीवन से जोड़ा और लोकमंगल को साहित्य का आधार बनाया। उनकी प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस अवधी भाषा में रामकथा का प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण है। विनयपत्रिका, कवितावली और दोहावली भी उनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। तुलसीदास के राम मर्यादा, करुणा और कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श हैं। उनके चरित्र के माध्यम से कवि ने परिवार, समाज और शासन के लिए उपयोगी जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा की। तुलसीदास का साहित्य मनुष्य को परहित, विनम्रता और सदाचार की प्रेरणा देता है। उन्होंने सरल लोकभाषा में गहरे भाव व्यक्त करके अपने काव्य को सामान्य जन तक पहुँचाया। उनके काव्य में भक्ति के साथ मानव-जीवन का व्यापक अनुभव भी मिलता है। इसीलिए उनका साहित्य आज भी लोगों को नैतिक शक्ति प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति में उनका स्थान अत्यंत सम्मानपूर्ण है।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसीदास का परिचय, उनकी प्रमुख रचनाएँ और लोकमंगल की भावना अनुच्छेद को विषयानुकूल पूर्णता देते हैं। उपर्युक्त आदर्श अनुच्छेद में इन्हीं बिंदुओं को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: तुलसीदास पर लिखते समय रामचरितमानस की भाषा अवधी अवश्य याद रखें और रचनाओं की सूची के साथ उनके जीवन-मूल्यों का भी उल्लेख करें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए :

मोबाइल फ़ोन की अपरिहार्यता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारपरक अनुच्छेद में विषय के मुख्य विचार को स्पष्ट करते हुए उसके समर्थन में दैनिक जीवन के ठोस उदाहरण दिए जाते हैं। सभी वाक्यों में विषयगत एकता बनी रहनी चाहिए।
- मोबाइल फ़ोन की अपरिहार्यता का आशय आधुनिक जीवन में उसकी बढ़ती आवश्यकता से है। उपयोगिता बताने के साथ उसके विवेकपूर्ण प्रयोग की आवश्यकता भी स्पष्ट की जा सकती है।

चरण 1: लेखन का स्वरूप तय करें एक उपयुक्त शीर्षक देकर एक ही अनुच्छेद में विचार विकसित करें। आरंभ में मोबाइल के बढ़ते महत्त्व का परिचय, मध्य में उसके प्रमुख उपयोग और अंत में संतुलित निष्कर्ष रखें। प्रश्न में शब्द-सीमा निर्धारित नहीं है, फिर भी अनावश्यक विस्तार से बचें और विषय पर केंद्रित रहें।

चरण 2: उपयोगिता के ठोस आधार चुनें त्वरित संपर्क, आपातकालीन सहायता, शिक्षा, व्यवसाय और आवश्यक सूचनाओं तक पहुँच उपयोगी उदाहरण हैं। फ़ोन और इंटरनेट की सुविधाओं में अंतर का ध्यान रखें; संदेश, ऑनलाइन अध्ययन और डिजिटल भुगतान जैसी सेवाओं के लिए उपयुक्त उपकरण तथा नेटवर्क आवश्यक होते हैं। सुविधा के साथ समय, गोपनीयता और स्वास्थ्य की सावधानी जोड़ने से विचार संतुलित बनता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **मोबाइल फ़ोन की अपरिहार्यता**

आज मोबाइल फ़ोन हमारे दैनिक जीवन का अत्यंत आवश्यक साधन बन गया है। पहले दूर रहने वाले परिजनों तक समाचार पहुँचाने में समय लगता था, जबकि अब उनसे तुरंत बातचीत की जा सकती है। दुर्घटना या बीमारी जैसी आपात स्थिति में सहायता बुलाने के लिए भी मोबाइल बहुत उपयोगी है। इंटरनेट से जुड़ा स्मार्टफ़ोन विद्यार्थियों को अध्ययन-सामग्री, व्यापारियों को ग्राहकों से संपर्क और यात्रियों को मार्ग संबंधी जानकारी उपलब्ध कराता है। अनेक लोग इसके माध्यम से आवश्यक भुगतान करते हैं और उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार एक छोटा-सा उपकरण संचार तथा अनेक दैनिक कार्यों को सुगम बना देता है। किंतु उसकी उपयोगिता का अर्थ यह नहीं कि हम हर समय उसी में व्यस्त रहें। अनावश्यक प्रयोग पढ़ाई, स्वास्थ्य और पारिवारिक संवाद को प्रभावित कर सकता है। निजी जानकारी की सुरक्षा का ध्यान रखना भी आवश्यक है। इसलिए मोबाइल को सुविधा और आवश्यकता का साधन मानकर उसका संयमित उपयोग

करना चाहिए। विवेकपूर्ण प्रयोग ही उसकी अपरिहार्यता को हमारे लिए लाभकारी बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष मोबाइल फ़ोन संपर्क, सहायता और दैनिक कार्यों को सरल बनाने के कारण महत्त्वपूर्ण है। आदर्श अनुच्छेद उसकी उपयोगिता के ठोस उदाहरण देकर संयमित तथा सुरक्षित प्रयोग का संदेश प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: मोबाइल की आवश्यकता पर अनुच्छेद लिखते समय संपर्क, आपात सहायता और अध्ययन के उदाहरण दें तथा अंतिम वाक्य में विवेकपूर्ण प्रयोग का संदेश जोड़ें।

4. नगर में परिवहन की समस्याओं पर चिंता व्यक्त करते हुए परिवहन आयुक्त को शिकायती पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायती पत्र में संबंधित अधिकारी को सार्वजनिक समस्या का तथ्यपूर्ण विवरण देकर समाधान का अनुरोध किया जाता है।
- प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और समापन औपचारिक पत्र के आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा यह पत्र परिवहन आयुक्त को लिखा जाएगा। विषय में नगर की परिवहन समस्या स्पष्ट होगी। भाषा विनम्र तथा सीधी रहेगी। व्यक्तिगत आक्षेप लगाने के बजाय नागरिकों की कठिनाइयों और उनके व्यावहारिक समाधान बताए जाएँगे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बसों की अनियमितता, कम संख्या, भीड़ और यातायात-नियमों के उल्लंघन को प्रमुख समस्याओं के रूप में लिया जा सकता है। इनके कारण विद्यार्थियों, कर्मचारियों और बुजुर्गों को होने वाली कठिनाइयाँ बताकर बसों की संख्या बढ़ाने, समय-सारिणी लागू करने और निगरानी की माँग की जाएगी।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शास्त्री नगर
नई दिल्ली
15 जुलाई, 2019
सेवा में,
परिवहन आयुक्त
परिवहन विभाग, नई दिल्ली
विषय: नगर की परिवहन समस्याओं के समाधान हेतु।
महोदय,
मैं आपके संज्ञान में नगर की बिगड़ती परिवहन व्यवस्था लाना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में बसें निर्धारित समय पर नहीं आतीं। कार्यालय और विद्यालय जाने के समय उनकी संख्या भी अपर्याप्त रहती है। फलस्वरूप यात्रियों को लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है और भीड़ भरी बसों में यात्रा करनी पड़ती है। विद्यार्थियों, महिलाओं और बुजुर्गों को विशेष कठिनाई होती है।
कुछ चालक बसें निर्धारित स्थान पर नहीं रोकते और यातायात के नियमों की उपेक्षा करते हैं। अव्यवस्थित पार्किंग तथा चौराहों पर वाहनों की भीड़ से जाम लगता है। इससे यात्रियों का समय नष्ट होता है और प्रदूषण बढ़ता है।
कृपया व्यस्त मार्गों पर अतिरिक्त बसें चलवाएँ, समय-सारिणी का पालन सुनिश्चित करें और बस-स्टॉप पर मार्ग-सूचना लगवाएँ। नियम तोड़ने वाले चालकों की निगरानी तथा शिकायतों के त्वरित निस्तारण की व्यवस्था भी आवश्यक है।
आशा है कि आप शीघ्र आवश्यक कार्रवाई करके नागरिकों को सुरक्षित और सुगम परिवहन उपलब्ध कराएँगे।
धन्यवाद।
भवदीय
अमित कुमार
स्थानीय निवासी

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में परिवहन की कठिनाइयाँ स्पष्ट करते हुए अतिरिक्त बसों, नियमित संचालन और प्रभावी निगरानी की माँग की

गई है।

त्वरित सुझाव: समस्या के साथ उसका नागरिकों पर प्रभाव और उसी से जुड़ा ठोस समाधान अवश्य लिखें।

अथवा

4. वर्तमान में शिक्षितों में भी अंधविश्वासों को मानने की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए और अपने सुझाव भी दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा पत्र सार्वजनिक सरोकार के विषय पर जनमत बनाने और जागरूकता फैलाने का माध्यम है।
- पत्र में शिक्षित समाज में अंधविश्वास की प्रवृत्ति पर चिंता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ाने के सुझाव दोनों आने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य प्रेषक का पता और दिनांक लिखने के बाद संपादक तथा समाचार-पत्र का पता दें। विषय में शिक्षितों में बढ़ते अंधविश्वास का उल्लेख करें। पत्र का उद्देश्य समाचार-पत्र के माध्यम से लोगों का ध्यान समस्या की ओर खींचना और उपयोगी सुझाव देना है।

चरण 2: तर्कों और सुझावों की योजना औपचारिक शिक्षा के बावजूद बिना जाँच किसी दावे को स्वीकार करना चिंता का विषय है। भय, असुरक्षा और चमत्कारों का प्रचार इस प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं। समाधान के लिए विद्यालयों, परिवारों और समाचार-माध्यमों की भूमिका बतानी चाहिए। किसी आस्था का उपहास करने के बजाय प्रमाण, तर्क और विवेक पर बल देना उपयुक्त है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 18, विकास नगर
लखनऊ
15 जुलाई, 2019
सेवा में,
संपादक महोदय
दैनिक जागरण, लखनऊ
विषय: शिक्षितों में बढ़ती अंधविश्वास की प्रवृत्ति के संबंध में।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं शिक्षित लोगों में भी अंधविश्वासों को मानने की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करना चाहता हूँ। शिक्षा का उद्देश्य विवेक और तार्किक दृष्टि विकसित करना है, किंतु अनेक पढ़े-लिखे लोग भी अप्रमाणित दावों और चमत्कारों के जाल में फँस जाते हैं। कभी रोग का उपचार कराने के स्थान पर झाड़-फूँक कराते हैं, तो कभी जीवन के निर्णय निराधार आशंकाओं पर लेते हैं।
भविष्य की चिंता, असुरक्षा और भ्रामक प्रचार ऐसी प्रवृत्तियों को बढ़ाते हैं। इनके कारण धन तथा समय की हानि होती है और कई बार स्वास्थ्य भी संकट में पड़ जाता है। केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं; अर्जित ज्ञान को व्यवहार में अपनाना आवश्यक है।
विद्यालयों में प्रश्न पूछने और प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष निकालने की आदत विकसित की जाए। समाचार-पत्र वैज्ञानिक विषयों पर सरल लेख प्रकाशित करें तथा भ्रामक दावों की जाँच करें। सामाजिक संस्थाएँ जागरूकता अभियान चलाएँ और परिवार बच्चों को विवेकपूर्ण सोच के लिए प्रोत्साहित करें।
कृपया इस विषय को अपने पत्र में स्थान देकर वैज्ञानिक चेतना के प्रसार में सहयोग दें।
धन्यवाद।
भवदीय
सुमित वर्मा

चरण 4: निष्कर्ष शिक्षित समाज में अंधविश्वास की समस्या का समाधान वैज्ञानिक दृष्टि, प्रमाण की जाँच और निरंतर जनजागरण से

संभव है।

त्वरित सुझाव: संपादक के पत्र में चिंता व्यक्त करने के बाद समाचार-माध्यमों और समाज के लिए लागू करने योग्य सुझाव भी दें।

5(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

एंकर बाइट किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर खबर का परिचय देता है और बाइट संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ संक्षिप्त कथन होती है।
- एंकर-बाइट प्रस्तुति में एंकर की सूचना के साथ खबर से संबंधित व्यक्ति का वक्तव्य सुनाया-दिखाया जाता है।

चरण 1: प्रस्तुति का क्रम पहले एंकर समाचार का संक्षिप्त परिचय देता है। इससे दर्शक घटना और उसके संदर्भ को समझते हैं। इसके बाद उसी खबर से जुड़े व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ कथन प्रस्तुत किया जाता है।

चरण 2: बाइट की भूमिका इस कथन में प्रत्यक्षदर्शी, संबंधित अधिकारी या किसी अन्य संबद्ध व्यक्ति की बात हो सकती है। बाइट खबर की जानकारी को संबंधित व्यक्ति की आवाज और तस्वीर के साथ आगे बढ़ाती है; यह केवल एंकर द्वारा लगातार पढ़ी गई खबर नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर के समाचार-परिचय के बाद खबर से जुड़े व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ कथन दिखाने-सुनाने की प्रस्तुति को एंकर-बाइट कहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों घटक लिखें: एंकर का परिचय और संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ कथन।

5(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

भारत में रेडियो का प्रारम्भ कब हुआ ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारत में रेडियो-प्रसारण के प्रारंभ और बाद में उसके नियमित या सरकारी संगठन के विकास में अंतर है।
- रेडियो क्लब ऑफ बॉम्बे द्वारा 1923 में किया गया प्रसारण भारत में रेडियो के आरंभ से जुड़ा है।

चरण 1: प्रारंभ का वर्ष पहचानना भारत में रेडियो का प्रारंभ 1923 में हुआ। बंबई के रेडियो क्लब ने जून 1923 में कार्यक्रम प्रसारित किए। इस प्रश्न में रेडियो के आरंभ का समय पूछा गया है।

चरण 2: बाद के विकास से भेद 1927 में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी के अंतर्गत प्रसारण-सेवा का संगठित विस्तार हुआ। वह बाद का चरण है। इसलिए आरंभ पूछे जाने पर 1923 लिखना चाहिए, न कि बाद की प्रसारण-संस्था की स्थापना का वर्ष।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में रेडियो का प्रारंभ जून 1923 में बंबई के रेडियो क्लब के प्रसारण से हुआ।

त्वरित सुझाव: रेडियो के आरंभ के लिए 1923 याद रखें; इसे 1927 की संगठित प्रसारण-सेवा से अलग रखें।

5(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जनसंचार के कोई दो कार्य लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार बड़े जनसमूह तक सूचना और विचार पहुँचाने की प्रक्रिया है।
- जनसंचार के कार्य बताते समय माध्यमों के नामों के स्थान पर उनके सामाजिक उपयोग लिखने चाहिए।

चरण 1: सूचना देना जनसंचार देश-दुनिया की घटनाओं, निर्णयों तथा परिवर्तनों की जानकारी लोगों तक पहुँचाता है। समाचारों के माध्यम से नागरिक अपने परिवेश से परिचित होते हैं।

चरण 2: शिक्षित करना जनसंचार स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण और नागरिक अधिकारों जैसे विषयों पर उपयोगी ज्ञान देकर लोगों को जागरूक बनाता है। इससे उनकी समझ तथा निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो कार्य हैं—लोगों को सूचना देना और उन्हें शिक्षित करना।

त्वरित सुझाव: दो कार्य पूछे जाने पर दो स्पष्ट क्रियाएँ लिखें; रेडियो और समाचारपत्र जैसे माध्यमों के नाम उत्तर नहीं हैं।

5(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

स्वतंत्र पत्रकार से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों के प्रकार उनके काम करने के संबंध और व्यवस्था से पहचाने जाते हैं।
- स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार-संस्था का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: कार्य-संबंध स्पष्ट करना स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचारपत्र, पत्रिका या समाचार-संस्था से स्थायी रूप से बँधा नहीं होता। वह अपनी स्वतंत्र कार्य-व्यवस्था के अंतर्गत सामग्री तैयार करता है।

चरण 2: सामग्री और पारिश्रमिक वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य समाचार-माध्यमों के लिए समाचार, लेख या रिपोर्ट उपलब्ध कराता है और सामान्यतः प्रकाशित या स्वीकृत सामग्री के अनुसार पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी एक संस्था का नियमित कर्मचारी बने बिना विभिन्न समाचार-माध्यमों के लिए पारिश्रमिक पर काम करता है, उसे स्वतंत्र पत्रकार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में एक संस्था से स्थायी संबंध का अभाव और विभिन्न माध्यमों के लिए काम करना दोनों स्पष्ट करें।

5(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

खोजी पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता का केंद्र जनहित से जुड़े छिपे तथ्यों का अन्वेषण है।
- इसमें दस्तावेजों, स्रोतों और प्रमाणों की जाँच करके तथ्य सामने लाए जाते हैं।

चरण 1: छिपे तथ्य खोजना खोजी पत्रकारिता में पत्रकार उन घटनाओं और अनियमितताओं की गहराई से पड़ताल करता है जिन्हें

सार्वजनिक जानकारी से छिपाया गया हो। भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग जैसे विषय इसके अंतर्गत आते हैं।

चरण 2: प्रमाण जुटाना और सत्यापन पत्रकार संबंधित दस्तावेजों, व्यक्तियों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से साक्ष्य जुटाता है तथा उनकी पुष्टि करता है। केवल अफवाह या निराधार आरोप प्रस्तुत करना खोजी पत्रकारिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित से जुड़े छिपे तथ्यों को गहन जाँच और प्रमाणों के आधार पर उजागर करने वाली पत्रकारिता खोजी पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में छिपे तथ्य, जनहित और प्रमाणपूर्ण जाँच को जोड़ें; इसे केवल सनसनीखेज समाचार कहना गलत होगा।

6. 'आतंकवाद' विषय पर एक आलेख लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का विवेचन, उसके प्रभाव और समाधान क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- प्रभावी आलेख में शीर्षक, लेखक का नाम और सुसंगत अनुच्छेद होते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक के बाद लेखक का नाम दें। भूमिका में आतंकवाद का अर्थ, मध्य भाग में उसके दुष्परिणाम तथा अंत में रोकथाम के उपाय और शांति का संदेश रखें। भाषा तथ्यपरक और संवेदनशील हो; किसी समुदाय को दोषी न ठहराएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श आलेख आतंकवाद : मानवता के सामने चुनौती

लेखक : आदित्य

आतंकवाद भय और हिंसा के माध्यम से अपने उद्देश्य पूरे करने का प्रयास है। इसमें निर्दोष लोगों को निशाना बनाकर समाज में असुरक्षा फैलाई जाती है। यह केवल कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं, बल्कि मानवता और लोकतांत्रिक जीवन पर आघात है।

आतंकी घटनाएँ लोगों की जान लेती हैं, परिवारों को उजाड़ती हैं और सामाजिक विश्वास को कमजोर करती हैं। शिक्षा, व्यापार तथा विकास की गति भी प्रभावित होती है। हिंसा का सबसे गहरा घाव उन बच्चों पर पड़ता है जो भय के वातावरण में बड़े होते हैं।

इस चुनौती का सामना करने के लिए सुरक्षा-व्यवस्था को सक्षम बनाना और विभिन्न देशों के बीच सहयोग बढ़ाना आवश्यक है। साथ ही युवाओं को शिक्षा, रोजगार और संवाद के अवसर मिलने चाहिए। भ्रामक प्रचार तथा घृणा फैलाने वाले संदेशों के प्रति जागरूकता भी जरूरी है।

नागरिक संदिग्ध गतिविधियों की सूचना संबंधित अधिकारियों को दें और अफवाहों से बचें। किसी धर्म या समुदाय को आतंकवाद से जोड़ना सामाजिक एकता को नुकसान पहुँचाता है। न्याय, सद्भाव और मानवीय मूल्यों पर आधारित सामूहिक प्रयास ही स्थायी शांति का मार्ग खोल सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह आलेख आतंकवाद की समस्या, मानवीय क्षति और समाधान को संतुलित तथा क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: समस्या पर आलेख लिखते समय केवल भयावह घटनाएँ न गिनाएँ; प्रभावों के बाद व्यावहारिक समाधान और स्पष्ट निष्कर्ष दें।

अथवा

6. अपने द्वारा हाल ही में पढ़ी गई किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में परिचय, विषयवस्तु, भाषा और मूल्यांकन का संतुलित विवेचन होता है।
- कथासार संक्षिप्त रखें और पुस्तक की उपयोगिता पर अपना तर्कसंगत मत दें।

चरण 1: प्रारूप और समीक्षा-योजना प्रेमचंद के उपन्यास गोदान की समीक्षा प्रस्तुत की जा सकती है। शीर्षक और समीक्षक के नाम के बाद लेखक-परिचय, केंद्रीय कथा, विशेषताएँ तथा मूल्यांकन लिखें। केवल पूरी कहानी सुनाने के बजाय रचना का प्रभाव बताएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श समीक्षा गोदान : किसान-जीवन का मार्मिक चित्र

समीक्षक : आदित्य

हाल ही में मैंने मुंशी प्रेमचंद का प्रसिद्ध उपन्यास गोदान पढ़ा। हिंदी साहित्य की यह महत्त्वपूर्ण कृति भारतीय किसान के संघर्ष और सामाजिक विषमता का संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती है।

उपन्यास के केंद्र में किसान होरी और उसका परिवार है। गाय पाने की साधारण इच्छा रखने वाला होरी ऋण, सामाजिक दबाव और शोषण के जाल में उलझता चला जाता है। उसकी पत्नी धनिया साहसी और व्यावहारिक है। उसके व्यक्तित्व में अन्याय का प्रतिरोध करने की शक्ति दिखाई देती है। ग्रामीण कथा के साथ शहरी जीवन का चित्रण उपन्यास के सामाजिक फलक को विस्तृत बनाता है।

प्रेमचंद की भाषा सहज, प्रभावशाली और पात्रों के परिवेश के अनुकूल है। संवादों के माध्यम से पात्रों का स्वभाव उभरता है। लेखक गरीबी का वर्णन करते हुए मनुष्य की गरिमा और उसकी विवशताओं को समझने की दृष्टि देता है।

अनेक पात्रों और प्रसंगों के कारण कुछ स्थानों पर कथा विस्तृत लगती है, फिर भी उसका केंद्रीय मानवीय सरोकार पाठक को बाँधे रखता है। गोदान मनोरंजन के साथ सामाजिक संवेदना भी विकसित करता है। किसान-जीवन तथा भारतीय समाज को समझने की इच्छा रखने वाले पाठकों के लिए यह अत्यंत उपयोगी और विचारोत्तेजक पुस्तक है।

चरण 3: निष्कर्ष समीक्षा में गोदान की विषयवस्तु, पात्रों, भाषा और सामाजिक महत्त्व का परिचय देकर संतुलित मूल्यांकन किया गया है।

त्वरित सुझाव: पुस्तक-समीक्षा में लेखक और पुस्तक का सही परिचय दें तथा कथासार के साथ भाषा, प्रभाव और अपना मूल्यांकन अवश्य जोड़ें।

---

7. 'स्वामी विवेकानंद' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्यपरक सामग्री को रोचक, चित्रात्मक और आत्मीय शैली में प्रस्तुत करता है।
- व्यक्तित्व पर फ़ीचर में घटनाएँ केवल तिथियों की सूची न बनें; उनका मानवीय अर्थ भी उभरे।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री-योजना आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ में शिकागो के ऐतिहासिक संबोधन का दृश्य रखें। फिर विवेकानंद के जीवन, गुरु, सेवा-विचार और युवाओं के लिए प्रेरणा को जोड़ते हुए समापन करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर युवाओं के मन में जागता विवेकानंद

लेखक : आदित्य

शिकागो का सभागार और भगवा वस्त्र पहने एक भारतीय संन्यासी! वर्ष 1893 की विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद का आत्मीय संबोधन भारतीय चिंतन और विश्वबंधुत्व की ऐसी पहचान बना, जिसकी गूँज आज भी सुनाई देती है।

12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में जन्मे नरेंद्रनाथ दत्त जिज्ञासु और निर्भीक स्वभाव के थे। सत्य की खोज उन्हें रामकृष्ण परमहंस तक ले गई। गुरु के सान्निध्य में उनकी आध्यात्मिक दृष्टि विकसित हुई और मानव-सेवा उनके जीवन का केंद्रीय उद्देश्य बन गई।

विवेकानंद ने भारत की यात्राओं में लोगों की गरीबी और पीड़ा को निकट से देखा। उनके लिए आध्यात्मिकता जीवन से दूर जाने का रास्ता नहीं, पीड़ित मनुष्य के काम आने की प्रेरणा थी। वर्ष 1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन ने सेवा के इस विचार को संगठित रूप दिया।

उनका व्यक्तित्व आज के युवाओं से भी संवाद करता है। आत्मविश्वास, अनुशासन, चरित्र और कर्म के प्रति निष्ठा उनके विचारों के प्रमुख आधार हैं। वे शिक्षा को मनुष्य की क्षमताओं के विकास से जोड़ते थे।

विवेकानंद को याद करने का अर्थ केवल उनकी तस्वीर के सामने पुष्प रखना नहीं है। अपने भीतर साहस जगाना, दूसरों की गरिमा का सम्मान करना और समाज के लिए उपयोगी काम करना उनकी प्रेरणा को जीवन में उतारना है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर विवेकानंद के जीवन के प्रमाणित प्रसंगों को सेवा, आत्मविश्वास और युवा-प्रेरणा के सूत्र में पिरोता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ किसी जीवंत दृश्य से करें और सत्यापित तथ्यों को रोचक भाषा में जोड़ें; अप्रमाणित उद्धरण न गढ़ें।

अथवा

7. 'मेरा बचपन' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर में किसी विषय का आत्मीय, रोचक और चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया जाता है। संस्मरणात्मक विषय में निजी अनुभव, अनुभूति और वातावरण का विशेष महत्त्व होता है।
- शीर्षक, आकर्षक आरंभ, घटनाओं का सहज विस्तार और भावपूर्ण समापन फीचर को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बचपन की स्मृतियों को केंद्र में रखकर फीचर का शीर्षक चुनें। घर, खेल, विद्यालय और मित्रों से जुड़ी छोटी घटनाएँ जोड़ें। वर्णन में गंध, ध्वनि और दृश्य का सहारा लें, जिससे पाठक उस वातावरण का अनुभव कर सके। घटनाओं को सूची की तरह गिनाने के स्थान पर उनके साथ अपनी अनुभूति भी व्यक्त करें। अंत में उन स्मृतियों का वर्तमान जीवन से संबंध दिखाएँ।

चरण 2: पूर्ण नमूना फीचर मेरा बचपन: यादों की सुनहरी पगडंडी

बारिश की पहली बूँद आज भी मुझे उस छोटे-से आँगन में पहुँचा देती है, जहाँ कागज की नावें मेरी सबसे बड़ी संपत्ति थीं। न मोबाइल की चिंता थी, न घड़ी की हड़बड़ी; बस दोस्तों की पुकार सुनते ही बाहर दौड़ पड़ता था।

दादी की कहानियों में जंगल बोलते थे और साधारण-सा कमरा जादुई संसार बन जाता था। माँ के हाथ की रोटी और आम के अचार की खुशबू में पूरे घर का अपनापन बसा था। विद्यालय की घंटी, बस्ते में छिपा टिफिन और अवकाश में बाँटी गई मिठाई आज भी याद हैं। कभी गृहकार्य अधूरा रहता तो डर लगता, पर मित्र का सहारा उस डर को हलका कर देता।

गर्मियों की दोपहरें आम के पेड़ की छाँव में बीतती थीं। गिल्ली-डंडे के छोटे विवाद अगले ही पल हँसी में बदल जाते। जीत का गर्व और हार की उदासी, दोनों अधिक देर नहीं टिकते थे।

अब जीवन की रफ्तार बढ़ गई है, लेकिन बचपन की वे यादें भीतर एक शांत कोना बचाए रखती हैं। उन्होंने मुझे बाँटना, मित्रता निभाना और छोटी खुशियों की कद्र करना सिखाया। बचपन लौट नहीं सकता, पर उसकी सहजता आज भी मेरा हाथ थाम सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फीचर बचपन के खेल, पारिवारिक स्नेह और विद्यालय की स्मृतियों को आत्मीय भाषा में प्रस्तुत करता है तथा उनके स्थायी प्रभाव को उभारता है।

त्वरित सुझाव: फीचर में दो-तीन ठोस दृश्य चुनें; केवल बचपन अच्छा था कहने के बजाय उन दृश्यों से उसका आनंद महसूस कराएँ।

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुए चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने ।

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). प्रात:काल के आकाश की तुलना किससे की गई है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा के माध्यम से कवि किसी दृश्य के रंग और गुण को परिचित वस्तु के सहारे स्पष्ट करता है।
- काव्यांश की पहली पंक्ति में प्रात:कालीन आकाश के नीले रंग को प्रमुखता दी गई है।

चरण 1: तुलना की पहचान कवि ने प्रात:काल के आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की है। इसका स्पष्ट आधार काव्यांश की पंक्ति है—'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे।' यहाँ आकाश उपमेय है और नीला शंख उपमान है। इस तुलना से पाठक के सामने भोर के आकाश का सघन नीला रूप उभरता है।

चरण 2: तुलना का कारण सूर्योदय से पहले आकाश में गहरा नीला रंग दिखाई देता है। उसकी स्वच्छता और शांत सौंदर्य को नीले शंख की छवि मूर्त बना देती है। शंख का परिचित बिंब आकाश की निर्मल, मनोहर आभा का अनुभव कराता है। कवि केवल रंग बताकर नहीं रुकता, बल्कि उसे एक सुंदर वस्तु से जोड़कर दृश्य को अधिक सजीव और आकर्षक बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रात:कालीन आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की गई है, क्योंकि दोनों की नीली, स्वच्छ और मनोहर आभा में समानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना वाले प्रश्न में पहले उपमान का नाम लिखें, फिर काव्यांश के शब्दों से समान गुण स्पष्ट करें।

8(ख). राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि भोर के प्राकृतिक दृश्य को घरेलू जीवन के परिचित बिंबों से जोड़ता है।
- गीले चौके का धूसर रंग और नमी भोर के आकाश की रंगत तथा आर्द्रता को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: चौके के बिंब का अर्थ भोर के आकाश को राख से लीपा हुआ चौका इसलिए कहा गया है कि उस समय उसका रंग राख के समान धूसर और हलका मटमैला दिखाई देता है। अभी सूर्य की तेज रोशनी नहीं फैली है। इसलिए आकाश के नीलेपन पर एक धुंधली, राख जैसी आभा का आभास मिलता है। कवि इस रंग को घर में राख से लीपे गए चौके की सहायता से समझाता है।

चरण 2: गीलेपन की सार्थकता कवि को यह चौका अभी गीला प्रतीत होता है। इससे प्रात:काल के वातावरण की नमी, ताजगी और शीतलता का बोध होता है। नया लीपा गया चौका स्वच्छ और ताजा लगता है; उसी प्रकार भोर का आकाश भी नया, शांत और निर्मल अनुभव होता है। इस घरेलू उपमान से आकाश का दृश्य केवल आँखों से देखने योग्य ही नहीं, बल्कि उसकी ठंडक महसूस करने योग्य भी बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भोर की धूसर रंगत, नमी और ताजगी के कारण आकाश को राख से लीपा हुआ, अभी गीला पड़ा चौका कहा गया है।

त्वरित सुझाव: राख से रंग का और अभी गीला से नमी तथा ताजगी का संकेत अलग-अलग स्पष्ट करें।

8(ग). भोर के बारे में कवि द्वारा व्यक्त की गई संभावनाओं में आपको कौन-सी सबसे रुचिकर लगी ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सौंदर्य-बोध के प्रश्न में चुने हुए बिंब के साथ उसकी आकर्षक विशेषता और अपना कारण लिखना आवश्यक है।
- कविता में लालिमा और अँधेरे का मेल घरेलू वस्तुओं तथा बाल-जगत के बिंबों से उभरता है।

चरण 1: रुचिकर संभावना का चयन मुझे भोर का आकाश ऐसी स्लेट के समान लगना सबसे रुचिकर लगा है, जिस पर किसी ने लाल खड़िया चाक मल दिया हो। यह बिंब बहुत परिचित होते हुए भी कल्पनापूर्ण है। आकाश का गहरा रंग स्लेट जैसा और उगते सूर्य की हलकी लालिमा उस पर मली हुई लाल खड़िया जैसी प्रतीत होती है। इस प्रकार दो रंगों का मेल एक छोटे-से दृश्य में सामने आ जाता है।

चरण 2: चयन का कारण यह संभावना मुझे इसलिए आकर्षित करती है कि इसमें प्रकृति का विशाल दृश्य बचपन की साधारण स्लेट से जुड़ जाता है। लगता है जैसे किसी बच्चे ने खेल-खेल में आकाश पर लाल रंग फैला दिया हो। इससे भोर की कोमलता, नवीनता और रंगों के धीरे-धीरे बदलने का अनुभव होता है। परिचित वस्तु से बना यह अनूठा चित्र सहज, आत्मीय और याद रह जाने वाला है।

चरण 3: निष्कर्ष लाल खड़िया से रँगी स्लेट का बिंब मुझे सबसे रुचिकर लगा, क्योंकि वह भोर के रंगों को बालसुलभ, आत्मीय और सजीव रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: अपनी पसंद का एक बिंब चुनकर उसके रंग, दृश्यात्मकता और निजी आकर्षण के ठोस कारण लिखें।

अथवा

8. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ ।
निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

8(क). भाव समझाइए : "मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में जग का अर्थ कवि की कल्पना और भावनाओं से बना संसार है।
- पंक्ति कवि की स्वतंत्र सृजनशीलता तथा बदलते आंतरिक अनुभवों को व्यक्त करती है।

चरण 1: जग रचने का अर्थ कवि अपने मन में प्रेम, सौंदर्य, आशाओं और आदर्शों के अनेक संसार रचता है। ये वास्तविक पृथ्वी पर बनाए गए नगर नहीं, बल्कि उसकी कल्पना की सृष्टियाँ हैं। बाहरी जगत उसके मन के अनुरूप नहीं है; इसलिए वह अपने अनुभवों और इच्छाओं के अनुसार एक अलग भाव-जगत बनाता है।

चरण 2: बनाकर मिटाने का भाव कवि किसी एक कल्पित संसार से स्थायी रूप से बँध नहीं जाता। उसकी भावनाएँ और आकांक्षाएँ निरंतर बदलती हैं, इसलिए वह पहले रचे संसार को छोड़कर नया संसार बना लेता है। बार-बार बनाने और मिटाने में उसके मन की बेचैनी,

कल्पना की सक्रियता और सृजन की स्वतंत्रता झलकती है। इस पंक्ति का भाव भौतिक विनाश नहीं, अंतर्मन में निरंतर होने वाली नई सृष्टि है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने मन में कल्पना के अनेक संसार रचता और बदलता रहता है; पंक्ति उसकी स्वतंत्र, निरंतर सक्रिय सृजनशीलता का परिचय देती है।

त्वरित सुझाव: जग को कल्पना का संसार मानकर अर्थ स्पष्ट करें और बनाने-मिटाने को कवि की सृजनशीलता से जोड़ें।

8(ख). पृथ्वी को ठुकराने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जग पृथ्वी पर धन और वैभव जोड़ता है; कवि की जीवन-दृष्टि उससे अलग है।
- पृथ्वी को ठुकराना भौतिक संचय की प्रवृत्ति को अस्वीकार करने का प्रतीक है।

चरण 1: संसार का आकर्षण काव्यांश में संसार उस पृथ्वी पर वैभव जोड़ता दिखाई देता है जिसे कवि ठुकराता है। सामान्य व्यक्ति धन-संपत्ति और बाहरी समृद्धि को जीवन की सफलता मानता है। उसका ध्यान वस्तुओं के संग्रह और सांसारिक उपलब्धियों पर लगा रहता है। कवि अपनी पहचान इस संग्रहशील संसार से अलग करता है।

चरण 2: कवि के लिए भावों का महत्त्व कवि के लिए प्रेम, आत्मानुभूति और मन की स्वतंत्रता भौतिक वैभव से अधिक मूल्यवान हैं। वह अपनी कल्पना से नए संसार बनाता है और अपने दुःख में भी संगीत सँजोता है। इसलिए धन-संचय की भूमि बनी पृथ्वी उसे आकर्षित नहीं करती। उसका ठुकराना पृथ्वी का वास्तविक विनाश या प्रकृति के प्रति घृणा नहीं, संसार की धनप्रधान जीवन-दृष्टि के प्रति असहमति है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि भौतिक धन और वैभव को जीवन का लक्ष्य नहीं मानता; वह अपने स्वतंत्र भाव-जगत को अधिक महत्त्व देता है, इसलिए वैभव-संचय वाली पृथ्वी को ठुकराता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय ठीक पहले की वैभव जोड़ने वाली पंक्ति को आधार बनाएँ; धन-संचय और कवि के मूल्यों का अंतर लिखें।

8(ग). कवि ने स्वयं को खंडहर का भाग क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खंडहर बाहरी वैभव से रहित किंतु स्मृतियों और अनुभवों से समृद्ध अस्तित्व का प्रतीक है।
- भूपों के प्रासाद और खंडहर का विरोध कवि के आत्मिक मूल्यों की महत्ता दिखाता है।

चरण 1: खंडहर और कवि की अनुभूति कवि अपने भीतर दुःख, टूटे सपनों और जीवन की पीड़ाओं को सँजोए हुए है। उसका अंतर्मन बाहरी वैभव से भरा प्रासाद नहीं, खंडहर जैसा दिखाई देता है। फिर भी वह अपनी वेदना में राग और शांत वाणी में आग रखता है। इसलिए यह खंडहर निरर्थक उजाड़ नहीं, गहरी संवेदना और अनुभवों का प्रतीक है।

चरण 2: प्रासादों से अधिक मूल्यवान भाग कवि कहता है कि उसके खंडहर के जिस भाग पर राजाओं के प्रासाद निछावर हो सकते हैं, वह उसी को लेकर चलता है। इससे स्पष्ट होता है कि उसके दुःखपूर्ण अंतर्जगत में भी प्रेम, स्मृतियों और आत्मिक संपदा का अपार मूल्य है। वह बाहरी धन की तुलना में अपने अनुभूतिपूर्ण जीवन को श्रेष्ठ मानता है। स्वयं को खंडहर का भाग कहने में पीड़ा के साथ अपने भीतरी मूल्य का बोध भी है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का जीवन पीड़ाओं और टूटे स्वप्नों से खंडहर जैसा है, किंतु उसकी संवेदना और आत्मिक संपदा राजसी वैभव से अधिक मूल्यवान हैं; इसी भाव से वह स्वयं को खंडहर का भाग कहता है।

त्वरित सुझाव: खंडहर को केवल निराशा न बताएँ; भूपों के प्रासाद निछावर होने से व्यक्त उसकी आंतरिक मूल्यवत्ता भी स्पष्ट करें।

9. आख़िरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
ज़ोर-ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी
हारकर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सौंदर्य बोधपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [4 अंक]

9(क). कविता का शिल्प-सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्तछंद में कथ्य की स्वाभाविक गति और बोलचाल के मुहावरे अभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।
- यांत्रिक क्रियाओं के बिंब भाषा और भाव के संबंध को मूर्त रूप देते हैं।

चरण 1: छंद और भाषा का स्वरूप काव्यांश मुक्तछंद में है; इसमें निश्चित तुक या मात्राओं का बंधन नहीं है। छोटी-बड़ी पंक्तियाँ बात को सँवारने के प्रयत्न और उसके बिगड़ने की क्रमिक स्थिति सामने रखती हैं। भाषा सरल, बोलचाल के निकट और मुहावरेदार है। "ज़ोर-ज़बरदस्ती", "चूड़ी मर गई" तथा "ठोंक दिया" जैसे प्रयोग कथन को सजीव बनाते हैं।

चरण 2: बिंब और अप्रस्तुत योजना बात को पेंच की तरह और अभिव्यक्ति को उसे कसने की प्रक्रिया की तरह प्रस्तुत किया गया है। "चूड़ी मर गई" और "बेकार घूमने लगी" में पेंच का यांत्रिक बिंब अर्थ के निष्प्रभावी हो जाने को मूर्त करता है। "कील की तरह" में स्पष्ट उपमा है। बात के लिए "मर गई" का प्रयोग भी निर्जीव भाव को जीवन का गुण देता है। ये बिंब भाषाई ज़बरदस्ती के दुष्परिणाम को सहज बना देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्तछंद, सहज मुहावरेदार भाषा, पेंच-कील के मूर्त बिंब और "कील की तरह" उपमा इस काव्यांश के प्रमुख शिल्पगत गुण हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प बताते समय मुक्तछंद और भाषा के साथ काव्यांश का एक ठोस बिंब तथा उसका प्रभाव अवश्य लिखें।

9(ख). कविता का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में सहज भाव और उसकी उपयुक्त अभिव्यक्ति के बीच संतुलन आवश्यक है।
- भाषा पर अनावश्यक बल देने से मूल बात की अर्थवत्ता और संप्रेषणीयता नष्ट हो सकती है।

चरण 1: भाषा पर बल देने का परिणाम कवि को आशंका थी कि बात को ज़बरदस्ती भाषा में ढालने पर उसका स्वाभाविक अर्थ बिगड़ जाएगा। अंततः यही होता है। "बात की चूड़ी मर गई" से आशय है कि अत्यधिक प्रयत्न और भाषाई बनावट के कारण बात की पकड़, प्रभाव और सहजता समाप्त हो जाती है। शब्द बने रहते हैं, किंतु वे अपेक्षित अर्थ नहीं पहुँचा पाते।

चरण 2: सहज अभिव्यक्ति की आवश्यकता बात का भाषा में बेकार घूमना निरर्थक शब्द-विस्तार का संकेत है। कवि हारकर उसे कील की तरह ठोंक देता है; यह स्वाभाविक अभिव्यक्ति के स्थान पर बलपूर्वक बात जमा देने की विवशता है। इसमें रचनाकार की असफलता और झुँझलाहट भी व्यक्त होती है। काव्यांश का सौंदर्य इस अनुभव को साधारण जीवन के उदाहरण से समझाने में है कि भाषा भाव की वाहक होनी चाहिए, उस पर बोझ नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश सहज और अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति का महत्त्व बताता है; कृत्रिम भाषाई दबाव से भाव की प्रभावशीलता नष्ट हो जाती है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में पेंच की तकनीक समझाने से अधिक उसके द्वारा व्यक्त भाषा और भाव के संबंध को स्पष्ट करें।

अथवा

9. नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में लेके हैं पिन्हाती कपड़े
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सौंदर्य बोधपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [4 अंक]

9(क). कविता के भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता के केंद्रीय अनुभव और संवेदना को स्पष्ट किया जाता है।
- प्रस्तुत रुबाई में माँ की देखभाल तथा बच्चे के सहज प्रेम से वात्सल्य उभरता है।

चरण 1: माँ की ममतामयी देखभाल माँ बच्चे को निर्मल जल से नहलाती है, उसके उलझे बालों में कंघी करती है और उसे अपने घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहनाती है। ये घर के सामान्य काम हैं, किंतु माँ उन्हें बड़े स्नेह से करती है। बच्चे की सफाई, सज्जा और सुविधा के प्रति उसका ध्यान मातृत्व की आत्मीयता तथा समर्पण को मूर्त कर देता है।

चरण 2: बच्चे की प्रेमपूर्ण प्रतिक्रिया कपड़े पहनाते समय बच्चा बड़े प्यार से माँ के मुख को देखता है। उसकी यह दृष्टि माँ के प्रति विश्वास, लगाव और सहज प्रेम व्यक्त करती है। माँ का स्नेह तथा बच्चे का प्रत्युत्तर मिलकर अत्यंत कोमल घरेलू दृश्य रचते हैं। बिना किसी बनावट या बड़े कथन के साधारण क्रियाओं में वात्सल्य का गहरा सौंदर्य उभरता है; यही इस काव्यांश की भावात्मक विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष रुबाई का भाव-सौंदर्य माँ की ममतामयी देखभाल और बच्चे की प्रेमपूर्ण दृष्टि के माध्यम से व्यक्त सहज, आत्मीय वात्सल्य में है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य लिखते समय नहलाने, बाल सँवारने और माँ को प्यार से देखने की क्रियाओं को वात्सल्य से जोड़ें।

9(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता के साथ काव्यांश से उसका उदाहरण देना आवश्यक है।
- इस काव्यांश में बोलचाल की मिश्रित शब्दावली और चित्रात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख हैं।

चरण 1: सहज मिश्रित बोलचाल पहली विशेषता सरल, बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा है। जल और निर्मल जैसे शब्दों के साथ गेसुओं और पिन्हाती जैसे प्रयोग आए हैं। गेसुओं का अर्थ बाल है, जबकि पिन्हाती पहनाती का बोलचाल वाला रूप है। इस मेल से भाषा घर-परिवार के सहज वातावरण के अनुकूल बनती है और माँ-बच्चे का दृश्य पाठक को आत्मीय लगता है।

चरण 2: चित्रात्मक और लयात्मक अभिव्यक्ति दूसरी विशेषता भाषा की चित्रात्मकता है। नहलाने, उलझे बालों में कंघी करने और घुटनों के बीच लेकर कपड़े पहनाने के शब्द दृश्य को आँखों के सामने उपस्थित कर देते हैं। बच्चा माँ का मुख देख रहा है, इसलिए उसकी प्रेमपूर्ण मुद्रा भी साकार होती है। छलके-छलके की पुनरावृत्ति जल के छलकने का अनुभव तथा लय उत्पन्न करके इसी चित्रात्मक प्रभाव को अधिक सजीव बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा सहज मिश्रित बोलचाल की तथा चित्रात्मक है; गेसुओं, पिन्हाती और नहलाने-कपड़े पहनाने के क्रियात्मक प्रयोग इन गुणों को स्पष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग-अलग बताएँ और प्रत्येक के समर्थन में इसी रुबाई के शब्द या क्रिया का उदाहरण दें।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शरद के आगमन पर प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं ? 'पतंग' कविता के आधार पर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की "पतंग" में ऋतु-परिवर्तन बच्चों के उल्लास और खुलते आकाश की पृष्ठभूमि बनता है।
- प्रकृति-चित्रण में वर्षा का बीतना, चमकता शरद-सवेरा और साफ आकाश परस्पर जुड़े हैं।

चरण 1: वर्षा के बाद प्रकृति का निखरना शरद के आगमन पर वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है। भादों के बीतने के साथ लगातार वर्षा और घने बादलों का वातावरण पीछे छूटता है। आकाश अधिक साफ तथा खुला दिखाई देने लगता है और धूप चमक उठती है। कवि "चमकीले इशारों" से वर्षा के जाने और उजले मौसम के आने को साकार करता है। इस परिवर्तन से वातावरण में खुलापन, ताज़गी और हलचल आती है।

चरण 2: सुबह का मानवीकरण और रंग कविता में शरद की सुबह को ऐसी चंचल आकृति के रूप में दिखाया गया है जो अपनी नई साइकिल तेज़ चलाती हुई आई है। उसकी घंटी की ध्वनि प्रकृति के जागने और नए उत्साह का संकेत देती है। सुबह के साथ सूर्य की लालिमा की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है। इस बिंब से कोमलता, चमक और ताज़ापन एक साथ प्रकट होते हैं। शरद का आगमन इसलिए नीरस ऋतु-परिवर्तन न रहकर एक उत्सव-जैसा अनुभव बनता है।

चरण 3: खुला आकाश और बाल-उल्लास वर्षा के बाद आकाश पतंग उड़ाने के लिए विस्तृत और अनुकूल दिखाई देता है। बच्चे छतों पर उत्साह से जुटते हैं और उनकी रंग-बिरंगी पतंगें खुले आकाश में उड़ती हैं। प्रकृति की चमक और बच्चों की चंचलता एक-दूसरे को बढ़ाती हैं। इस प्रकार कविता में शरद का स्वच्छ आकाश, लालिमामय सवेरा और नई स्फूर्ति बच्चों के उन्मुक्त जीवन से जुड़ते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष शरद आने पर वर्षा विदा होती है, आकाश स्वच्छ होता है और उजली धूप व लालिमामय सुबह प्रकृति में नई स्फूर्ति भर देती हैं; यही वातावरण पतंग उड़ाते बच्चों का उत्साह बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को वर्षा की विदाई, शरद की चमकती सुबह और पतंगों के लिए खुले आकाश के क्रम में लिखें।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

तुलसीदास के अनुसार राम तथा भरत के भ्रातृभाव की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के काव्य में राम और भरत का संबंध नि:स्वार्थ प्रेम, विश्वास और त्याग का आदर्श है।
- "लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप" में राम का भरत के प्रति विश्वास तथा भरत का राम और लक्ष्मण के प्रति अनुराग प्रकट होता है।

चरण 1: राम का भरत पर अटूट विश्वास लक्ष्मण की मूर्च्छा के प्रसंग में राम का विलाप भ्रातृप्रेम की गहराई व्यक्त करता है। भरत दूसरी माता के पुत्र होते हुए भी उनके अत्यंत प्रिय भाई हैं; राम-भरत का स्नेह अलग माताओं के कारण कभी कम नहीं होता। साथ ही लक्ष्मण के सेवा-त्याग को स्मरण करते हैं। भरत के प्रति उनके मन में राज्य को लेकर ईर्ष्या या संदेह नहीं है। वे भरत के निर्मल प्रेम और सद्भाव से परिचित हैं। इस विश्वास में दोनों भाइयों के संबंध की पवित्रता दिखाई देती है।

चरण 2: भरत की व्याकुलता और सेवाभाव संजीवनी लेकर जा रहे हनुमान से राम तथा लक्ष्मण का समाचार पाकर भरत अत्यंत दु:खी होते हैं। वे स्वयं को धिक्कारते हैं कि संकट की घड़ी में भाई के काम नहीं आ सके। अपने शारीरिक सामर्थ्य, भुजाओं और बाणों के रहते भी सहायता न कर पाने की पीड़ा उनके निष्कपट स्नेह को व्यक्त करती है। वे हनुमान को शीघ्र पहुँचाने के लिए अपने बाण पर बैठाकर भेजने का प्रस्ताव रखते हैं।

चरण 3: भ्रातृभाव की प्रमुख विशेषताएँ राम और भरत का प्रेम स्वार्थरहित है। उसमें पद, राज्य और व्यक्तिगत सुख से बढ़कर भाई की कुशलता का महत्त्व है। राम का भरत पर विश्वास और भरत की सहायता के लिए तत्परता परस्पर पूरक हैं। भरत राम की महिमा तथा उनके सेवक का भी आदर करते हैं; हनुमान से मिलने पर उनका स्नेह सेवा में बदल जाता है। इसलिए यह संबंध केवल जन्म की निकटता

नहीं, बल्कि त्याग, विनम्रता, समर्पण और कर्तव्य का आदर्श है।

चरण 4: निष्कर्ष राम-भरत का भ्रातृभाव निष्कपट प्रेम, अटूट विश्वास, त्याग और सहायता की तत्परता पर आधारित है; भरत की व्याकुलता तथा हनुमान को शीघ्र भेजने का प्रस्ताव इसे मूर्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: भरत के प्रेम का प्रमाण देते समय हनुमान से समाचार मिलना, आत्मग्लानि और शीघ्र सहायता के प्रस्ताव का उल्लेख करें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में जनसंचार माध्यमों की संवेदनहीनता और मानवीय दुख के व्यावसायिक उपयोग पर व्यंग्य है।
- कविता के साक्षात्कारकर्ता की भाषा और उसकी अपेक्षाओं से मीडिया का वास्तविक उद्देश्य स्पष्ट होता है।

चरण 1: सेवा के दावे और व्यवहार का विरोध कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को समर्थ और विकलांग व्यक्ति को असमर्थ मानते हैं। वे उसे कैमरे के सामने लाकर उसका दुख जानने का दावा करते हैं, किंतु उसकी गरिमा और मानसिक स्थिति का ध्यान नहीं रखते। बार-बार उसकी अपंगता का एहसास कराने वाले प्रश्न पूछकर वे उसे असहज करते हैं। इस प्रकार सहायता और संवेदना का बाहरी रूप व्यक्ति के प्रति असंवेदनशील व्यवहार को ढकता है।

चरण 2: दुख को प्रदर्शन में बदलना साक्षात्कारकर्ता चाहता है कि अपाहिज व्यक्ति रो पड़े और दर्शकों में भी करुणा का दृश्य प्रभाव उत्पन्न हो। कैमरे तथा प्रश्नों की पूरी व्यवस्था इसी लक्ष्य के लिए है। यहाँ पीड़ित की समस्या का समाधान आवश्यक नहीं माना जाता; उसके आँसू कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने की सामग्री बन जाते हैं। कवि ऐसे मीडिया की आलोचना करता है जो सामाजिक दायित्व निभाने के स्थान पर मानवीय पीड़ा को मनोरंजन और लोकप्रियता का साधन बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता में मीडिया की भूमिका विरोधाभासी है। वह सामाजिक सरोकार का दावा करता है, पर पीड़ित की गरिमा की रक्षा करने के बजाय उसके दुख का प्रदर्शन करता है। कवि उससे संवेदना, जिम्मेदारी और मानवीय सम्मान की अपेक्षा करता है।

त्वरित सुझाव: मीडिया की भूमिका समझाते समय उसके सेवा के दावे और आँसू दिखाने के उद्देश्य को साथ रखकर लिखिए।

10(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

रघुपति सहाय 'फिराक' के पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि उनकी भाषा में हिन्दी, उर्दू और लोकभाषा के प्रयोग ख़ूब मिलते हैं । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक की पठित रुबाइयों और ग़ज़ल में हिंदी, उर्दू तथा बोलचाल की लोकभाषा का सहज मेल है।
- शब्दों के साथ घरेलू प्रसंग और लोकप्रचलित क्रियाएँ भी भाषा की आत्मीयता प्रकट करती हैं।

चरण 1: हिंदी और उर्दू के शब्द फ़िराक के यहाँ आँगन, माँ, बालक, चाँद, राखी तथा बादल जैसे हिंदी के परिचित शब्द आते हैं। दूसरी ओर ज़िद, गेसू और नरम जैसे प्रचलित उर्दू-फ़ारसी रंग वाले प्रयोग भाषा को कोमलता देते हैं। ग़ज़ल में नौरस, दामन, दुनिया और शख़्सियत जैसे शब्द भी हिंदुस्तानी भाषा की मिली-जुली प्रकृति दिखाते हैं। ये शब्द किसी कृत्रिम सजावट के रूप में नहीं, भाव और प्रसंग के अनुकूल आते हैं।

चरण 2: लोकभाषा की सहजता बच्चे को झुलाना, नहलाना, कंघी करना, घुटनियों में लेकर कपड़े पहनाना और चाँद का खिलौना माँगना

घरेलू जीवन के सहज प्रसंग हैं। लचका, लोच, घुटनियों और पिन्हाती जैसे बोलचाल के प्रयोग लोकजीवन की जीवंतता लाते हैं। दीवाली के घरौंदे और राखी जैसे उत्सव भी इसी आत्मीय सांस्कृतिक संसार को रचते हैं। उर्दू की नज़ाकत, हिंदी की सहजता और लोकभाषा की मिठास मिलकर उनकी काव्यभाषा को प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष फ़िराक की भाषा किसी एक भाषिक परंपरा तक सीमित नहीं है। हिंदी के घरेलू शब्द, उर्दू की भावपूर्ण शब्दावली और लोकबोली के आत्मीय प्रयोग मिलकर उसमें हिंदुस्तानी जीवन और संस्कृति का सहज रूप उपस्थित करते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा-संबंधी उत्तर में केवल भाषाओं के नाम न लिखें; पठित कविता से शब्द और घरेलू प्रयोग भी दीजिए।

11. इन बातों को आज पचास से ज़्यादा वर्ष होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं । कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए क्या करते हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एक मात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम इसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं पानी झमाझम बरसता है पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है बैल प्यासे के प्यासे रह जाते हैं आख़िर कब बदलेगी यह स्थिति ?

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

11(क). 'कब बदलेगी यह स्थिति' पूछकर लेखक ने किस बात की ओर संकेत किया है ? आपके विचार से यह कैसे बदल सकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लेखक स्वार्थ, त्याग के अभाव तथा भ्रष्टाचार से पैदा हुई सामाजिक विसंगति पर प्रश्न उठाता है।
- स्थिति सुधारने के लिए व्यक्तिगत आचरण और सामूहिक उत्तरदायित्व दोनों आवश्यक हैं।

चरण 1: संकेतित स्थिति लेखक का संकेत उस स्थिति की ओर है जिसमें लोग देश से बड़ी-बड़ी माँगें करते हैं, पर उसके लिए त्याग करने को तैयार नहीं होते। वे दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा तो करते हैं, लेकिन अपने व्यवहार की जाँच नहीं करते। फलतः साधन और अवसर उपलब्ध होने पर भी वास्तविक जरूरतमंदों की आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं।

चरण 2: बदलाव का उपाय यह स्थिति तब बदल सकती है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने दायरे में ईमानदारी बरते, स्वार्थ पर नियंत्रण रखे और दूसरों के हित के लिए योगदान दे। भ्रष्टाचार की आलोचना के साथ उसमें अपनी भागीदारी भी रोकनी होगी। संसाधनों का उचित उपयोग और जरूरतमंदों तक लाभ पहुँचाने की जिम्मेदारी स्वीकार करने से सामाजिक व्यवस्था सुधर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक स्वार्थ और भ्रष्टाचार के कारण बने अभाव की ओर संकेत करता है। ईमानदार आत्मपरीक्षण, त्याग, कर्तव्यपालन और लोकहित में सक्रिय योगदान से यह स्थिति बदल सकती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों भाग अलग रखें: पहले स्थिति पहचानें, फिर अपने आचरण से शुरू होने वाले सुधार बताइए।

11(ख). लेखक को कैसी बातें कचोटती हैं ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक के मन को पुरानी सीख और वर्तमान समाज के व्यवहार के बीच का अंतर कचोटता है।
- गद्यांश का आधार दूसरों पर दोष लगाने से पहले अपने आचरण की जाँच करना है।

चरण 1: कचोटने वाली बातें लेखक को यह बात कचोटती है कि लोग हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी माँगें करते हैं, लेकिन त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं मिलता। अपना स्वार्थ ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया है। लोग चटखारे लेकर दूसरों के भ्रष्टाचार की बातें करते हैं,

किंतु यह नहीं देखते कि कहीं वे स्वयं भी अपने स्तर पर उसी भ्रष्टाचार का हिस्सा तो नहीं हैं।

चरण 2: व्यथा का कारण इन बातों से लेखक इसलिए व्यथित है कि देश और समाज का भला केवल माँगों तथा आलोचना से नहीं हो सकता। उसके लिए ईमानदारी, आत्मपरीक्षण और त्याग जरूरी हैं। पर्याप्त अवसर और संसाधन होने पर भी जरूरतमंदों का वंचित रहना बताता है कि सामूहिक हित के स्थान पर स्वार्थ हावी है। पुरानी सीख आज भी व्यवहार में न उतरना उसके दुख को बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष त्यागहीन माँगें, बढ़ता स्वार्थ और अपने दोषों को अनदेखा करके दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा लेखक को कचोटती है, क्योंकि इनके रहते समाज का वास्तविक कल्याण और जरूरतमंदों की तृप्ति संभव नहीं होती।

त्वरित सुझाव: क्यों वाले भाग में लेखक की पीड़ा को देशहित और त्याग की आवश्यकता से जोड़ना न भूलें।

11(ग). पानी, गगरी और बैल का प्रतीकार्थ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अंतिम बिंबों का अर्थ सामाजिक संदर्भ में ग्रहण करना चाहिए।
- संसाधनों की उपलब्धता और उनके लाभ से वंचित जनजीवन के विरोध को ये प्रतीक स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: पानी और गगरी पानी जीवनदायी साधनों, उपलब्ध संसाधनों तथा विकास के लिए आने वाली सहायता का प्रतीक है। गगरी उन साधनों को सहेजने और लोगों तक पहुँचाने वाली व्यवस्था का प्रतीक है। उसका फूटा रहना व्यवस्था की खराबी, भ्रष्टाचार तथा अपव्यय का संकेत करता है। इसलिए पर्याप्त पानी बरसने पर भी वह उपयोग के लिए सुरक्षित नहीं रह पाता।

चरण 2: बैल और समूचे बिंब का आशय बैल परिश्रम करने वाले सामान्य लोगों, विशेषकर खेती और श्रम से जुड़े जरूरतमंद जन का प्रतीक हैं। उनका प्यासा रहना दिखाता है कि साधनों की प्रचुरता के बावजूद उनके हिस्से का लाभ उन्हें नहीं मिलता। लेखक इस बिंब से बताता है कि केवल संसाधन बढ़ाना पर्याप्त नहीं; दोषपूर्ण व्यवस्था और स्वार्थ को दूर करके लाभ वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुँचाना भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष पानी संसाधनों और सहायता का, फूटी गगरी उन्हें सँभालने वाली दोषपूर्ण व्यवस्था का तथा प्यासे बैल वंचित श्रमजीवी जनता का प्रतीक हैं। इनके माध्यम से लेखक संसाधन होते हुए भी जनहित अधूरा रहने की विडंबना दिखाता है।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रतीक बताकर उनका संबंध भी स्पष्ट करें: संसाधन आते हैं, दोषपूर्ण व्यवस्था में नष्ट होते हैं, जनता वंचित रहती है।

अथवा

11. भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों का पता है उनमें कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परम्पराओं को मालूम है लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे सिद्धांत की माँग करता है जो भारतीय परम्पराओं में नहीं मिलता । रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है वह 'दूसरों' पर है और अधिकांशत: परसंताप प्रेरित है । जो करुणा है वह अकसर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है ।

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [6 अंक]

11(क). भारतीय सौंदर्यशास्त्र में प्रयुक्त रसों की क्या विशेषता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया रसों के सह-अस्तित्व का स्पष्ट कथन है।
- एक रचना में अनेक रसों की उपस्थिति और करुणा का हास्य में रूपांतरण अलग बातें हैं।

चरण 1: अनेक रसों की पहचान गद्यांश के अनुसार भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को अनेक रसों का ज्ञान है। वह कलाकृति में विविध भावात्मक अनुभूतियों को पहचानता है और उनका आस्वाद करता है। जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं; इसलिए कलात्मक अनुभव को केवल एक ही भाव तक सीमित मानना यहाँ उचित नहीं होगा।

चरण 2: एक कलाकृति में सह-अस्तित्व भारतीय सौंदर्यशास्त्र में कुछ रसों का एक ही कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है। अर्थात विभिन्न रसों की संगति रचना के प्रभाव को समृद्ध कर सकती है। इसके साथ लेखक एक सीमा भी बताता है: करुणा का हास्य में बदल जाना जिस सिद्धांत की माँग करता है, वह भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। इस सीमा से सभी रसों के साथ होने का निषेध नहीं निकलता।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय सौंदर्यशास्त्र अनेक रसों को पहचानता है और कुछ रसों का एक ही कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेष्ठ भी मानता है; किंतु करुणा के हास्य में रूपांतरण का सिद्धांत उसमें नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: साथ-साथ पाए जाने और एक रस के दूसरे में बदल जाने का अंतर रखें; गद्यांश रसों के सह-अस्तित्व को स्वीकार करता है।

11(ख). करुणा के संदर्भ में भारतीय परम्परा में क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- करुणा के विषय में गद्यांश दो बातें कहता है: उसका पात्र और हास्य से उसका संबंध।
- उत्तर में अक्सर तथा कभी-कभार जैसे भेद सुरक्षित रखने चाहिए।

चरण 1: करुणा के पात्र गद्यांश में बताया गया है कि भारतीय परंपरा में करुणा अक्सर सद्व्यक्तियों के लिए होती है और कभी-कभार दुष्टों के लिए भी होती है। अर्थात अच्छे व्यक्ति की पीड़ा सहज रूप से सहानुभूति जगाती है, पर करुणा का अनुभव केवल उसी तक सीमित नहीं है। कुछ प्रसंगों में दुष्ट व्यक्ति की स्थिति भी करुणा का कारण बन सकती है।

चरण 2: करुणा और हास्य का संबंध लेखक यह भी स्पष्ट करता है कि करुणा का हास्य में बदल जाना एक विशिष्ट सिद्धांत की माँग करता है, जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। हर्ष और विषाद का जीवन में आना तथा कुछ रसों का कलाकृति में साथ होना स्वीकार है, लेकिन इससे करुणा का हँसी में बदलना सिद्ध नहीं होता। इसलिए करुणा की मान्यता बताते समय उसके पात्रों के साथ इस अलगाव का उल्लेख भी उपयोगी है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपरा में करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों और कभी-कभार दुष्टों के प्रति होती है; करुणा को हास्य में बदलने वाला सिद्धांत यहाँ नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: अक्सर सद्व्यक्तियों और कभी-कभार दुष्टों का भेद अवश्य लिखें; दुष्टों के प्रति करुणा को पूरी तरह नकारें नहीं।

11(ग). रामायण और महाभारत में प्रायः कैसा हास्य मिलता है ? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के मत और उस पर अपनी सहमति को अलग-अलग स्पष्ट करना आवश्यक है।
- अधिकांशतः का अर्थ सामान्य प्रवृत्ति है, हर प्रसंग के लिए अनिवार्य नियम नहीं।

चरण 1: गद्यांश में व्यक्त मत लेखक के अनुसार रामायण तथा महाभारत का हास्य दूसरों पर केंद्रित है और अधिकांशतः परसंताप-प्रेरित है। इसका अर्थ है कि किसी दूसरे की कठिनाई, असुविधा या उपहासपूर्ण स्थिति हँसी का कारण बनती है। यह अपने ही दुःख को देखकर स्वयं पर हँसने की प्रवृत्ति से अलग है; लेखक इसी अंतर की ओर ध्यान दिलाता है।

चरण 2: मत पर संतुलित सहमति इस कथन से सामान्य प्रवृत्ति की सीमा तक सहमत हुआ जा सकता है, क्योंकि दूसरे की स्थिति या दुर्बलता पर आधारित उपहास में उसके कष्ट से मनोरंजन प्राप्त होता है। फिर भी इसे दोनों महाकाव्यों के प्रत्येक हास्य-प्रसंग का अंतिम नियम नहीं मानना चाहिए। गद्यांश स्वयं अधिकांशतः कहकर अपवाद की संभावना रखता है। अतः मत को प्रायः मिलने वाले हास्य का वर्णन समझना उचित है, संपूर्ण हास्य का एकमात्र रूप मानना नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष रामायण और महाभारत में प्रायः दूसरों पर केंद्रित, परसंताप-प्रेरित हास्य मिलता है। इस सामान्य प्रवृत्ति से सहमति है, किंतु इसे हर हास्य-प्रसंग पर लागू करना उचित नहीं है।

त्वरित सुझाव: पहले लेखक का मत लिखें, फिर अपनी सहमति की सीमा बताएँ; अधिकांशतः शब्द के कारण पूर्ण और निरपेक्ष दावा न करें।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भक्तिन कौन थी ? उसकी तुलना हनुमानजी से क्यों की गई है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन का व्यक्तित्व उसकी सेवा, निष्ठा और आत्मीयता से उभरता है।
- हनुमानजी से तुलना का आधार रूप या शक्ति नहीं, समर्पित सेवक-धर्म है।

चरण 1: भक्तिन का परिचय भक्तिन महादेवी वर्मा की सेविका और आत्मीय संगिनी थी। उसका वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। वह गाँव की निर्धन, स्वाभिमानी और कर्मठ स्त्री थी। जीवन में अनेक कठिनाइयाँ सहने के बाद वह लेखिका के यहाँ काम करने आई। उसके गले की कंठी और भक्तिपूर्ण रूप को देखकर लेखिका ने उसे भक्तिन नाम दिया। धीरे-धीरे उसका संबंध केवल काम करने वाली सेविका का न रहकर परिवार के आत्मीय सदस्य जैसा हो गया।

चरण 2: हनुमानजी से तुलना का कारण जिस प्रकार हनुमानजी श्रीराम के प्रति अनन्य निष्ठा रखते हुए उनकी सेवा में तत्पर रहते थे, उसी प्रकार भक्तिन लेखिका की सेवा को अपना कर्तव्य मानती थी। वह लेखिका की सुविधा, भोजन और आवश्यकताओं का ध्यान रखती थी। उसके सेवाभाव में आत्मीय लगाव और अधिकार दोनों थे। वह लेखिका के जीवन में अपने को अपरिहार्य मानती थी और उनके हित की चिंता करती थी। वह कठिन समय में भी लेखिका का साथ छोड़ने को तैयार नहीं होती थी। इसलिए सेवक-धर्म के पालन में उसकी तुलना हनुमानजी से की गई है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन लेखिका की निष्ठावान सेविका तथा आत्मीय सहयोगिनी थी। अटूट निष्ठा, समर्पण और सेवक-धर्म के कारण उसकी तुलना हनुमानजी से की गई है।

त्वरित सुझाव: परिचय में वास्तविक नाम लिखें और तुलना में निष्ठा तथा सेवक-धर्म का आधार स्पष्ट करें।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पहलवान को राजमहल से कब और क्यों निकाल दिया गया, कारण सहित स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में लुट्टन का जीवन राजकीय संरक्षण पर आश्रित लोककला की स्थिति दिखाता है।
- पहलवान का निष्कासन सत्ता तथा मनोरंजन की रुचि में परिवर्तन का परिणाम है।

चरण 1: निष्कासन का समय लुट्टन पहलवान को वृद्ध राजा की मृत्यु के बाद राजमहल से निकाला गया। बूढ़े राजा कुश्ती के प्रेमी और पहलवान के संरक्षक थे। उनके समय में लुट्टन को सम्मान तथा भोजन आदि की सुविधाएँ मिलती थीं। वह अपने दोनों बेटों को भी पहलवानी का अभ्यास करा रहा था। राजा की मृत्यु के बाद विलायत से लौटे राजकुमार ने शासन सँभाला और महल की पुरानी व्यवस्था

बदल दी।

चरण 2: नए शासक का दृष्टिकोण और परिणाम नए राजकुमार की रुचि कुश्ती के बजाय घुड़दौड़ में थी। इसलिए दंगल का स्थान घोड़े की रेस ने ले लिया। पहलवान और उसके दोनों बेटों के प्रतिदिन के भोजन का खर्च सुनकर राजकुमार को वह अनावश्यक व्यय लगा। नए प्रबंधक ने भी इस खर्च का विरोध किया। इस बदली हुई व्यवस्था में लुट्टन की कला का मूल्य नहीं रहा और उसे दोनों बेटों सहित महल से विदा कर दिया गया। इस प्रकार निष्कासन का कारण उसकी पराजय या अक्षमता नहीं, नए शासक की रुचि तथा राजकीय संरक्षण की नीति में परिवर्तन था।

चरण 3: निष्कर्ष वृद्ध राजा की मृत्यु और नए राजकुमार के शासन सँभालने पर लुट्टन को निकाल दिया गया। कुश्ती के प्रति अरुचि, घुड़दौड़ को प्राथमिकता तथा भोजन-व्यय को अनावश्यक मानना इसके मुख्य कारण थे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले समय बताएँ, फिर नए शासक की रुचि और खर्च संबंधी दृष्टिकोण को जोड़ें।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शिरीष के फूलों की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के माध्यम से अनासक्ति, मस्ती और कठिन परिस्थितियों में जीवंत रहने का संदेश देते हैं।
- कालजयी अवधूत की तरह शिरीष बाहरी कठिनाइयों से विचलित हुए बिना अपनी सरसता बनाए रखता है।

चरण 1: तुलना का आधार पहचानना शिरीष के फूलों की तुलना कालजयी अवधूत अर्थात मस्त, अनासक्त संन्यासी से की गई है। अवधूत सुख-दुःख और बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव से ऊपर उठकर सहज भाव से जीता है। शिरीष भी उसी तरह अपने चारों ओर की कठोरता से पराजित नहीं होता। उसका खिलना जीवन के प्रति उल्लास और निर्लिप्तता का परिचय देता है। यहाँ तुलना केवल फूलों की सुंदरता पर नहीं, उनके स्वभाव और विपरीत परिस्थितियों में बने रहने पर आधारित है।

चरण 2: विपरीत परिस्थितियों में सरसता जेठ की तपती धूप, लू और उमस में जब दूसरे पेड़-पौधे मुरझाने लगते हैं, तब भी शिरीष कोमल फूलों से लदा रहता है। वह वसंत से आषाढ़ तक अपनी शोभा और मस्ती बनाए रखता है। बाहरी वातावरण की कठोरता उसकी भीतरी सरसता को समाप्त नहीं कर पाती। इसी कारण वह ऐसे अवधूत जैसा लगता है जो सुख-दुःख में संतुलित रहकर जीवन की शक्ति पर विश्वास रखता है। यह तुलना मनुष्य को भी कठिन समय में धैर्य, प्रसन्नता और जीवट बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के फूल कालजयी अवधूत के समान हैं, क्योंकि भीषण गर्मी और अन्य प्रतिकूलताओं के बीच भी वे मस्त, सरस तथा अविचल बने रहते हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना का नाम कालजयी अवधूत लिखकर गर्मी और लू में खिलने का उदाहरण अवश्य जोड़ें।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'बाज़ार का जादू' क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सजावट और वस्तुओं का आकर्षण अनावश्यक उपभोग की इच्छा जगाता है।
- जैनेंद्र कुमार आवश्यकता की स्पष्ट समझ को इस आकर्षण से बचने का उपाय मानते हैं।

चरण 1: जादू का अर्थ बाज़ार का जादू उसकी चकाचौंध और सजी-धजी वस्तुओं का वह आकर्षण है जो खरीदार को अपनी वास्तविक

जरूरत भुला देता है। सामने रखी अनेक चीजें उसे आवश्यक लगने लगती हैं।

चरण 2: मन पर प्रभाव इस मोह में व्यक्ति उपयोगिता के बजाय दिखावे से प्रभावित होकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने लगता है। अपनी आवश्यकता स्पष्ट रखने वाला व्यक्ति इस आकर्षण को पहचानकर संयमित खरीदारी कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं की चकाचौंध से पैदा होने वाला वह मोह है, जो व्यक्ति को जरूरत से अधिक खरीदने के लिए ललचाता है।

त्वरित सुझाव: जादू को अलौकिक घटना न बताएँ; सजावट से पैदा होने वाली खरीदने की लालसा स्पष्ट करें।

13. 'जूझ' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर विचार कीजिए । यह कथानायक के व्यक्तित्व के बारे में क्या स्पष्ट करता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक रचना के केंद्रीय भाव का संकेत करता है। 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से निरंतर संघर्ष करना।
- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना में कथानायक का शिक्षा के लिए संघर्ष उसके व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है।

चरण 1: शीर्षक को कथा की मुख्य समस्या से जोड़ना 'जूझ' शीर्षक कथानायक की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा और उसके रास्ते की बाधाओं को व्यक्त करता है। घर की आर्थिक कठिनाइयों के साथ पिता का विरोध भी उसकी पढ़ाई में बाधक है। पिता चाहते हैं कि वह खेती के काम में लगा रहे। कथानायक के लिए विद्यालय जाना सहज उपलब्ध सुविधा नहीं, बल्कि संघर्ष से प्राप्त अवसर है। वह परिस्थितियों के सामने हार मानकर अपनी पढ़ने की इच्छा नहीं छोड़ता। इस प्रकार शीर्षक कथा की मूल समस्या और उसके समाधान की दिशा, दोनों को समेटता है।

चरण 2: संघर्ष के उदाहरणों से व्यक्तित्व स्पष्ट करना कथानायक माँ की सहायता और दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से दोबारा पढ़ने का अवसर जुटाता है। उसे खेती के काम और पढ़ाई के बीच संतुलन भी बनाना पड़ता है। विद्यालय में उपहास और पिछड़ जाने की कठिनाई के बावजूद वह मेहनत से आगे बढ़ता है। न. वा. सौंदलगेकर द्वारा कविता पढ़ाए जाने से उसके भीतर साहित्य के प्रति रुचि जागती है। वह स्वयं कविता रचने का अभ्यास करता है। ये प्रसंग बताते हैं कि उसमें आत्मसम्मान, लगन, परिश्रम, संवेदनशीलता और अपनी स्थिति बदलने की दृढ़ इच्छा है। उसका संघर्ष केवल बाहरी बाधाओं से नहीं, अपनी क्षमताओं को निखारने के लिए भी है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः 'जूझ' शीर्षक पूर्णतः सार्थक है। यह कथानायक के शिक्षा और रचनात्मक विकास के लिए किए गए निरंतर संघर्ष को सामने लाता है तथा उसके जुझारू, स्वाभिमानी, कर्मठ और संकल्पशील व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का अर्थ बताकर पिता का विरोध, पढ़ाई की पुनः शुरुआत और कविता की साधना के उदाहरण दें; फिर इन्हें व्यक्तित्व के गुणों से जोड़ें।

अथवा

13. 'सिलवर वेडिंग' कहानी के आलोक में लिखिए कि वर्तमान समय में मध्यम वर्गीय परिवारों की संरचना और बदलाव के बारे में यह कहानी किन सत्यों को उजागर करती है ? उदाहरण भी दीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी बदलते मध्यमवर्गीय परिवार में पीढ़ियों के बीच जीवनदृष्टि और मूल्यों के अंतर को सामने लाती है।
- पारिवारिक संबंधों का विवेचन करते समय आर्थिक उन्नति, उपभोक्तावाद, परंपरा और भावनात्मक निकटता के उदाहरण साथ देखना आवश्यक है।

चरण 1: पारिवारिक संरचना और पीढ़ियों का अंतर पहचानना 'सिलवर वेडिंग' दिखाती है कि मध्यमवर्गीय परिवार साथ रहते हुए भी विचारों और जीवनशैली में बँट सकते हैं। यशोधर बाबू अपने मार्गदर्शक किशनदा से मिले सादगी, अनुशासन और सामुदायिक अपनत्व के मूल्यों को महत्त्व देते हैं। उनकी संतानें आधुनिक ढंग से जीना और व्यक्तिगत प्रगति करना चाहती हैं। पत्नी भी बच्चों के साथ समयानुकूल बदलाव अपनाती हैं। इस कारण पिता अपने ही परिवार में अकेलापन अनुभव करते हैं। यहाँ पारिवारिक बदलाव केवल सदस्यों की संख्या का नहीं, बल्कि अधिकार, निर्णय और पारस्परिक समझ के बदलने का प्रश्न है।

चरण 2: कथा के उदाहरणों से आधुनिक मध्यमवर्ग की आकांक्षाएँ समझना विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आधुनिक ढंग से उत्सव आयोजित करना नए सामाजिक व्यवहार का उदाहरण है। बेटे भूषण की अच्छी आय और उपहारों के माध्यम से स्नेह व्यक्त करने का ढंग आर्थिक उन्नति तथा उपभोग की नई संस्कृति को प्रकट करता है। पिता के लिए लाया गया ड्रेसिंग गाउन भी दोनों पीढ़ियों के बीच अंतर स्पष्ट करता है। यशोधर बाबू को केवल वस्तु से संतोष नहीं मिलता; वे बेटे के साथ और आत्मीय आग्रह की आकांक्षा रखते हैं। दूसरी ओर, पुरानी रीति पर उनका आग्रह नए परिवार से संवाद कठिन बनाता है। इसलिए कहानी परिवर्तन को केवल नई पीढ़ी का दोष नहीं बनाती; वह दोनों पीढ़ियों के बीच संवेदना और संवाद की आवश्यकता दिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वह आर्थिक रूप से आगे बढ़ते मध्यमवर्ग में बदलती जीवनशैली, पीढ़ीगत दूरी और भावनात्मक अकेलेपन का सत्य उजागर करती है। पारिवारिक संबंधों को सार्थक बनाने के लिए सुविधाओं के साथ समय, समझ और आत्मीयता भी आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: सामान्य सामाजिक टिप्पणी तक सीमित न रहें; वर्षगाँठ का आयोजन, भूषण की आय और ड्रेसिंग गाउन को मूल्यों तथा भावनात्मक जरूरतों से जोड़ें।

14(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता का मूल्यांकन उसकी नगर-योजना, सार्वजनिक सुविधाओं, कला और सामाजिक जीवन के आधार पर किया जाता है।
- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत में मोहनजोदड़ो के पुरातात्त्विक अवशेष एक विकसित और सुसंस्कृत समाज का परिचय देते हैं।

चरण 1: नगर-योजना और सार्वजनिक व्यवस्था सिंधु सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सुव्यवस्थित नगर-योजना थी। मोहनजोदड़ो की सड़कें और गलियाँ योजनाबद्ध थीं। पक्की ईंटों के मकान, जल-निकासी की नालियाँ, कुएँ और स्नानघर बताते हैं कि निवासी सफाई और सुविधा का ध्यान रखते थे। घरों से निकलने वाले पानी की निकासी की व्यवस्था सामुदायिक स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखाती है। विशाल स्नानागार का निर्माण भी सार्वजनिक जीवन और सामूहिक व्यवस्था के विकसित रूप का प्रमाण है।

चरण 2: कला, जीवन-दृष्टि और सामाजिक विशेषताएँ यह सभ्यता कला और सुरुचि से संपन्न थी। मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण, बर्तन और खिलौने उसके शिल्प-कौशल तथा सौंदर्य-बोध के प्रमाण हैं। कांस्य की नर्तकी जैसी कलाकृति से कलाकार की बारीक दृष्टि और कुशलता सामने आती है। खेती, व्यापार और विभिन्न शिल्पों के कारण आर्थिक जीवन भी विकसित था। पाठ में भव्य राजप्रासादों और प्रभुत्वशाली धार्मिक स्मारकों की अपेक्षा सामान्य नागरिकों के जीवन की सुविधाएँ अधिक ध्यान खींचती हैं। इससे लेखक को यह सभ्यता मानव-केंद्रित और अपेक्षाकृत आडंबरहीन प्रतीत होती है। उसके बचे हुए अवशेषों में सत्ता के प्रदर्शन की तुलना में जीवन को व्यवस्थित और सुंदर बनाने का प्रयत्न अधिक मुखर है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार सिंधु सभ्यता योजनाबद्ध नगरों, स्वच्छता, विकसित शिल्प, सौंदर्य-बोध और नागरिक सुविधाओं से युक्त सभ्यता थी। उसके अवशेष बताते हैं कि वहाँ सामान्य जीवन को सुव्यवस्थित और समृद्ध बनाने को विशेष महत्त्व दिया जाता था।

त्वरित सुझाव: उत्तर को नगर-योजना, स्वच्छता, कला और नागरिक जीवन के चार आधारों पर व्यवस्थित करें तथा प्रत्येक के साथ पाठ से एक उदाहरण जोड़ें।

14(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल, ऐसा क्यों ? स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में पीढ़ियों का अंतर परिवार के बदलते रहन-सहन और यशोधर बाबू के संस्कारों के संघर्ष से प्रकट होता है।
- समय के साथ अनुकूलन के लिए नई परिस्थितियों को समझने और पुराने आग्रहों में आवश्यक परिवर्तन करने की क्षमता जरूरी है।

चरण 1: पत्नी का व्यावहारिक और अनुकूलनशील दृष्टिकोण यशोधर बाबू की पत्नी नए समय और बच्चों की बदलती जीवन-शैली को अपेक्षाकृत सहजता से स्वीकार कर लेती है। बच्चों से मिलने वाला सहयोग और उनके साथ रहने की इच्छा उसे नए तौर-तरीकों की ओर ले जाती है। वह पहनावे और रहन-सहन में परिवर्तन से घबराती नहीं है तथा बच्चों के उत्साह में सम्मिलित होती है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ के आयोजन में भी वह पति की तरह लगातार संकोच और आपत्ति में नहीं उलझती। उसका व्यावहारिक स्वभाव उसे परिवार की नई परिस्थितियों के साथ जोड़ता है।

चरण 2: यशोधर बाबू के संस्कार और मानसिक द्वंद्व यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किशनदा के आदर्शों, पुराने संस्कारों और सादगी के आग्रह से गहराई से जुड़ा है। वे आधुनिक जीवन की प्रदर्शनप्रियता तथा पाश्चात्य ढंग के उत्सवों को सहजता से नहीं अपना पाते। उन्हें बच्चों की बढ़ती आय और बदले व्यवहार में अपरिचित संसार दिखाई देता है। वे अनेक बातों को अनुचित समझकर उन पर संदेह करते हैं और पुराने मानदंडों से ही उनका मूल्यांकन करते रहते हैं। इस कारण नई पीढ़ी के स्नेह की अभिव्यक्ति भी उन्हें पूरी तरह सहज नहीं लगती। बेटे द्वारा दिए गए गाउन के प्रसंग में उनका अकेलापन और पारिवारिक निकटता की आकांक्षा सामने आती है। उनकी समस्या केवल आधुनिक वस्तुओं से विरोध नहीं, बल्कि बदलते संबंधों के बीच अपनी जगह तलाशने का मानसिक द्वंद्व भी है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्नी का लचीला और व्यावहारिक स्वभाव उसे समय के साथ ढलने में सहायता देता है, जबकि यशोधर बाबू की पुराने आदर्शों से गहरी निष्ठा और नए व्यवहार के प्रति संकोच उन्हें बदलाव से सहज संबंध बनाने नहीं देते।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पत्नी की अनुकूलनशीलता और यशोधर बाबू के पुराने संस्कार दोनों समझाएँ; सिल्वर वैडिंग या गाउन के प्रसंग से बात पुष्ट करें।

14(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा ? उसने उनका समाधान किस प्रकार किया ? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' शिक्षा प्राप्त करने के लिए किए गए संघर्ष और प्रतिकूल वातावरण को परिश्रम से बदलने की प्रेरणा देता है।
- लेखक की समस्याएँ वेशभूषा पर उपहास, पढ़ाई में पिछड़ने और कक्षा में स्वयं को अपरिचित अनुभव करने से जुड़ी थीं। उनके समाधान में आत्मसंयम, नियमित अध्ययन और सहयोग की भूमिका है।

चरण 1: पाठशाला में आई परेशानियाँ खेती के काम के कारण लेखक की पढ़ाई बीच में छूट गई थी। दोबारा पाठशाला पहुँचने पर उसे लगा कि दूसरे लड़के आगे बढ़ गए हैं और वह पढ़ाई में पिछड़ गया है। उसकी देहाती वेशभूषा भी उपहास का कारण बनी। वह मोटे कपड़े का कुर्ता, धोती और पुरानी टोपी पहनकर गया था, जबकि दूसरे लड़कों की पोशाक अलग थी। चह्वाण जैसे शरारती लड़के उसकी धोती और टोपी का मज़ाक उड़ाते थे। उसकी टोपी छीनकर उछालने से उसे अपमान तथा असुरक्षा का अनुभव हुआ। पढ़ाई से लंबे अंतराल के कारण उसे पाठ समझने में भी कठिनाई हुई।

चरण 2: समस्याओं का समाधान और आत्मविश्वास लेखक ने इन बाधाओं के कारण पढ़ाई छोड़ने के बजाय परिस्थिति के अनुरूप अपने

को ढाला। उसने अपने लिए उपयुक्त पोशाक की व्यवस्था की और उपहास को अपने लक्ष्य पर हावी नहीं होने दिया। कक्षा के मेहनती तथा समझदार विद्यार्थी वसंत पाटील का साथ उसके लिए विशेष सहायक बना। उसके निकट बैठकर लेखक ने पढ़ने का ढंग सीखा, कठिनाइयाँ पूछीं और मन लगाकर अभ्यास किया। धीरे-धीरे वह सवाल हल करने लगा तथा अध्यापकों का विश्वास प्राप्त करने लगा। दूसरे विद्यार्थियों की सहायता करने का अवसर मिलने से कक्षा में उसका सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ा। इस प्रकार उसने धैर्य, लगन तथा अच्छे साथी के सहयोग से शुरुआती परेशानियों पर विजय पाई।

चरण 3: निष्कर्ष पाठशाला में लेखक को उपहास, संकोच और पढ़ाई में पिछड़ने की समस्या झेलनी पड़ी। उसने अनुकूलन, वसंत पाटील की संगति और लगातार मेहनत से इन समस्याओं का समाधान किया तथा कक्षा में सम्मान प्राप्त किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हर परेशानी के साथ उसका समाधान जोड़ें और वसंत पाटील के सहयोग तथा लेखक के परिश्रम का उल्लेख अवश्य करें।

14(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ऐन फ्रैंक की डायरी के आधार पर किशोर वर्ग की मानसिक स्थिति पर अपने विचार लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी किशोर मन की संवेदनशीलता, स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह और समझे जाने की आकांक्षा को अभिव्यक्त करती है।
- किशोरावस्था की भावनाओं को युद्ध और छिपकर रहने की विवशता के संदर्भ में समझना चाहिए; ऐन के निजी अनुभव सभी किशोरों के समान अनुभव नहीं माने जा सकते।

चरण 1: आत्मीयता और स्वतंत्र पहचान की आकांक्षा ऐन की डायरी से स्पष्ट होता है कि किशोर केवल बड़ों के आदेश मानने वाले सदस्य नहीं रहना चाहते; वे अपने विचारों और भावनाओं की स्वतंत्र पहचान भी चाहते हैं। ऐन को लगता है कि बड़े लोग उसके अंतर्मन को पूरी तरह नहीं समझते। इसलिए वह डायरी को आत्मीय साथी बनाकर उससे अपने मन की बात कहती है। किशोरावस्था में स्नेह, विश्वास तथा ऐसे श्रोता की आवश्यकता बढ़ जाती है जो उपदेश देने से पहले उनकी बात सुने। बड़ों की आलोचना, तुलना अथवा लगातार रोक-टोक उन्हें आहत कर सकती है। ऐन का आत्मविश्लेषण इस उम्र की विचारशीलता और अपने व्यक्तित्व को समझने की इच्छा प्रकट करता है।

चरण 2: भावनात्मक द्वंद्व और आशापूर्ण भविष्य-दृष्टि पीटर के प्रति ऐन का आकर्षण तथा उससे बातचीत की इच्छा किशोर मन में विकसित होते आत्मीय संबंधों की आवश्यकता को दिखाती है। साथ ही, उसमें संकोच, उत्सुकता, अकेलापन और स्वयं को परखने की प्रवृत्ति भी है। युद्ध, यहूदी-विरोधी अत्याचार और छिपकर रहने की विवशता ने उसकी बेचैनी को अधिक तीव्र बनाया। फिर भी उसकी पढ़ने, लिखने और भविष्य में कुछ बनने की इच्छा समाप्त नहीं होती। इससे पता चलता है कि किशोर संवेदनशील होने के साथ कल्पनाशील और आकांक्षाशील भी होते हैं। मेरे विचार से उनकी मानसिक स्थिति को अपरिपक्वता कहकर उपेक्षित करने के बजाय परिवार को संवाद, भरोसे और सम्मान का वातावरण देना चाहिए, जिससे उनकी ऊर्जा रचनात्मक दिशा में विकसित हो।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन की डायरी किशोर वर्ग में आत्मीयता, स्वतंत्रता, पहचान और भविष्य की आशा की प्रबल आवश्यकता दिखाती है। इस अवस्था के भावनात्मक उतार-चढ़ाव को सहानुभूति से समझना और किशोरों को विश्वासपूर्वक अपनी बात कहने देना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: किशोर मन की प्रत्येक विशेषता को ऐन के किसी अनुभव से जोड़ें; युद्धजनित भय और सामान्य किशोर भावनाओं के संबंध को भी स्पष्ट करें।